Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुलसीदास कृत रामायण का इतिहास

راماین کا اتہاس

SRI RANBIR LIBRARY
No. 2928
JAMMOO
2928
3369

जिसमें

रामायण सम्बन्धी दोहा चौपाइयों के प्रसङ्ग में बाल्मीक, नारद, कुम्भज, परशुराम, दुर्व्वासा, ध्रुव, दक्ष, चित्रकेतु, कनक कशिपु, सिवि, दधीचि, गालव, नहुष, आदि राजाओं व ऋषीश्वरों का वृत्तान्त वर्णित है

श्रीमन्महाराजाधिराज गुणि गण मण्डली मण्डन श्री उद्दित नारायण सिंह जी वीरेश काशी नरेश की

आज्ञानुसार

कविकुल शिरोमणि श्री रघुनाथ दास कविने बनाया

महात्मा हरि भक्तों और अन्य विद्यानुरागियों के उपकारार्थ

लखनऊ

Rajeev

मुन्शी नवलकिशोर के छापे खाने में छापागया

अक्टूबर सन् १८७८ ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

6424

294.5

R 04 T.

Raghunath Das

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुलसीदास कृत रामायण का इतिहास

راماین کا اتہاس

SRIRANBIR LIBRARY
No. 2928
JAMMOO
2928
3369

जिसमें

रामायण सम्बन्धी दोहा चौपाइयों के प्रसङ्ग में बाल्मीक, नारद, कुम्भज, परशुराम, दुर्व्वासा, ध्रुव, दक्ष, चित्रकेतु, कनक कशिपु, सिवि, दधीचि, गालव, नहुष, आदि राजाओं व ऋषीश्वरों का वृत्तान्त वर्णित है

श्रीमन्महाराजाधिराज गुणि गण मण्डली मण्डन श्री उद्दित नारायण सिंह जी वीरेश काशी नरेश की

आज्ञानुसार

कविकुल शिरोमणि श्री रघुनाथ दास कविने बनाया

महात्मा हरि भक्तों और अन्य विद्यानुरागियों के उपकारार्थ

लखनऊ

Rajeev

मुन्शी नवलकिशोर के छापे खाने में छापागया

अक्टूबर सन् १८७८ ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

0124.

Price B: 11/=

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग्रंथ शंकावली

श्रीजानकी बल्लभो विजयते। ए गोसांई जी की रामायण विचार तें सर्व शंका रहित है जाते पूर्व परल गाए तें इसी ग्रंथ में समाधान बाहुल्य ते मिलत है परंतु इस ग्रंथ का प्रचार बहुत है यातें बहुत लोग शंका करत हैं तातें कछु लिखन हैं शंका भाषा कहू करव मैं सोई प्रतिज्ञा तें बिरुद्ध कांड के आदि संस्कृत कवि काहि लिखे· उत्तर। देव बानी अति मंगल रूप जानकै वा भाषा के खट्लछन में संस्कृत हू चाहिये १ सं· निज इष्टदेव त्यागि प्रथम गणेश बंदना किए उ· गणेश का प्रथम पूजन सर्व सम्मत वा प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ २ सं· गोसांई जू अनन्य हिभुज रघुबर उपासक नारायण जू को उर में बास ए काहे को उ· दोऊ का अभेद जानि प्रमाण प्रगट भये श्रीकना ३ सं माया जीव ब्रह्म जगदीश ये सब अनादि हैं बिधि ने कैसे बनाये उ· उपजाने में तात्पर्य नहीं है गुण औगुण का प्रकरण है वा प्रार्थना तें बिधि ने उपजाये प्रमाज य जय सुर नायक इत्यादि प्रार्थना और तुमहिं लागि धरि हौं नरबेषा ४ सं पूर्व अनेक बंदना करि आये अब बंदौ प्रथम मही सुर चरणा यह कैसे बने उ· चारों वर्ण में प्रथम कही आदि ब्राह्मण ५ सं· बंदौ प्रथम भरत के चरण कैसे बने उ· तीनों भाइन में प्रथम भरत वा श्रीराम भक्तन में मुख्य ६ सं· नाम बंदना में चाप भंग में कहि दंड कानन पावन कहा यामें कांड क्रम भंग दोष होत है उ· विवाहादि शेष बालकांड चरित्र चाप भंग अंतर गत है प्र० टूटत ही धनु भयो विवाह इत्यादि औ समग्र अयोध्याकांड आधा आरण्य दंडक वन पावनये गतार्थ है प्र· मुनि गण मिलन बिशेष बन इत्यादि वा सप्त कांड में तात्पर्य नाहीं किंतु वाके प्रतापादि बर्णन में है ७ सं· गोसांई जी कहू कविन होहु कहत हौं कहीं कवि तुलसी यामें काहेतु उ कविन होहु निज दीनता से कवि शंभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी इत्यादि ८ सं· अघ तो प्रसिद्ध है बिन अघ तजी सती यह कैसे उ· इहां अघ शब्द दुःख वाचक है सती त्याग में शिव जू के कछु दुःख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वर्णन भयो दुःखी भयउ वियोग प्रभु तोरे यह भक्ति विरह तें कहे पत्नी भाव तें नहीं ८
सं॰ प्रजा सहित रघुबंश मणि निज धाम गये यह प्रश्न के उत्तर न दिये सो क्या उ॰
उपासकन के नित अवध बिहार सम्मत है तातें बक्ता मौन रहे वा उत्तर में गुप्त उत्तर दि
ये गये जहां शीतल अमराई बाग से फिर गृह आगमन लिखे १० सं॰ जो प्रभु में न
हीं पूछो सो भी कहना सो शिवजू कहा कहे उ॰ औरों एक कहों निज चोरी इत्यादि
११ सं॰ सती मोह तो आरण्य कांड में भयो फूल बाटिका में गिरिजा नाम से पूजन
कैसे करे उ॰ देवता अनादि हैं इन में सब नाम सदा प्रसिद्ध हैं प्र॰ गुरु अनादि
जिय जानि १२ शं॰ निश दिन नहिं अवलोकहिं कोका उभय घरी में रात दिन के
से बने उ॰ कोक निश ही में भोग करने लगे दिन नाहीं देखत यह अचरज वाको
पुर्ष का दूसरी यह निज पत्नी संबंध के मर्यादान रही १३ शं॰ काम की चढ़ाई तो सं
कर के विजय हेत है विश्व विजय गाये सो काहेतु उ॰ विश्व विजयी काम के संहार
से शंकर के अति बड़ाई में तात्पर्य है १४ शं॰ मनुसतरूपा के बरदान समय में
युगल प्रगटे बरदान राघव दियो किसोरी जी न बोली सो क्या हेतु उ॰ दोनों का अ
भेद है प्र॰ देखत भिन्नन भिन्न १५ शं॰ भानुप्रताप धर्मात्मा ज्ञानी सो आप तें रा
क्षस भयो यामें क्या हेत। जीव के प्रारब्ध कर्म मुख्य हैं प्र॰ तुलसीजस भव तव्यता
इत्यादि १६ शं॰ रावण के बरदान में बानर मनुज दुई और मरो एक मनुज राघव हा
थ से दूसर बर का क्या हेत उ॰ रावण बधमें रामजू प्र॰ आपन बध मानव करबा
ची हंस्यो राक्षस बधमें ये दोऊ भिन्न भिन्न कारण हैं १७ शं॰ जन्म एक दुइ ए
तीन कल्प की कथा पहिले शिवजू कहे चतुर्थ कल्प के प्रसंग में मन प्रकरणा
तें आकाश बानी तें कहे कश्यप अदिति महातप कीन्हा पुनः नारद बचन सत्य
सब करिहौं यह पूर्व कल्प के कथा इहां कहां ते आई उ॰ भेद से इहां। व्यवस्था
प्र॰ कल्प भेद हरि चरित सुहाये। भांति अनेक मुनीसन गाये इत्यादि १८ शं॰ श्रीराम
दि चारों भाइन्ह के नाम करण में क्रम भंग है उ॰ इहां पाठ क्रम तें अर्थ क्रम
बली है वा राम तापनी मांडू कोप निषद में क्रम विपर्य यहै बालक्षमणा
के विशेष गुण कहिने थे यातें भरत के लिखे नहीं सत्रुघन की आड़ से
लिखे १९ शं॰ माता को पै लै अलौकिक विवेक दिए रहे अब सो भूली
ए विश्वरूप दिखाये या में क्या हेतु उ॰ वात्सल्य की अधिकता से माता भू
ली प्रभु विश्वरूप दिखाइ के पूर्व विवेक दृढ़ कराइन्ह २० शं॰ विश्वामित्र
पहिले ही जानते रहे तब ऋषि निज नाथ चीन्हे यह कैसे बने उ॰ गृह में ऋषि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाल बिनोद देखि भूले ताड़का बधसे पुनः ईश्वर जाने प्र· गीतावली प्रगट च
रित सुहाये इत्यादि २१ सं ऋषि दोऊ भाइन्ह को यज्ञ रक्षा हेतु ल्याये राजा ज
बिना मिथिला को क्यों ले गये उ· अब मुनि ही पिता हैं प्र· राजा बचन तुम मु
नि पिता आन नहि कोई २२ श्रं· मिथलेश जू प्रथम नहीं बिश्वामित्र से राम प्रता
प जाने रहे तब सभा में अनादर बचन सबके साथ क्यों कहे उ· राम रूप मोह
नी तें जनक जू राघव का ऐश्वर्य भूले यहां वात्सल्य रस प्रधान है २३ श्रं· सीय
स्वयंबर देखिय जाई यह नाहीं बनत जाते सिया जू स्वतंत्र बर नाहीं बरा उ· स्व
यंबर दुइ विध है प्रन स्वयंबर द्रोपदी आदिका स्वतः स्वयं बर द्रोपदी दमयंती
आदि २४ श्रं· जनक बाम दिशि सोह सुनैना और स्मृति मैं ऋ लोक में द
क्षिण दिशि पाइयतु है सो क्या हेतु उ· वाम कही शिव शिव कही कल्याण दि
शि अर्थ तें कल्याण दिशि आवत है वा जनक की वाम पत्नी सुनैना सोह
दिशि दक्षिण दिशि अथवा जनक है वाम दिशा जेहि के ऐसी सुनैना २५श्रं
जब ते राम व्याहि घर आये तब तें अयोध्या में सब आनंद बसे तो आगे क्या
आनंद नहीं है उ· अल्हादनी शक्ति सीता जू तेहितें आनंद पूर्ण भयो यह भाव है २६

इति संक्षेप तें बालकांड शंका वली

अयोध्याकांड शंकावली श्रं· पूर्व बालकांड में ही श्रीगुरु पद रज तें बिवेक ने
त्र बिमल करे पुन इहां निज मन मुकुर सुधार काहे लिखे उ· भरत महिमा वर्णन
अति अगम जानि पुनः मन निर्मल कीन्ह· प्र· भरत परम महिमा सुनि रानी
जानहिं राम न सकहिं बखानी। अयोध्या कांड में मुख्य भरत चरित्र प्र· भरत
चरित करि नेम इत्यादि वा महाराज दशरथ आदि सबका मनोरथ भंग इस कां
डमें विचार रजते सो कमल दूर कीन्ह २७ श्रं· दशरथ जू राम जू को बिश्वा-
मित्र साथ भेजे तब तनु त्याग न करे बन यात्रा में कीन्ह सो क्या हेतु उ· बिश्वा
मित्र के साथ गये नहां बशिष्ठ जू बचन ते संदेह नाश और मुनि सहायक
और ऋषि तनु के नृप निज माण धारण करि बचे प्र· तुम मुनि पिता आन
नहिं कोऊ पुनः सुत उर लाइ मृतक जनु भेटे बन में सब बिपरीत तेहि तें तनु
त्याग २८ श्रं· श्रीजानकी जू बन यात्रा समय में सेवा करै को कहां और
ग्रंथकार सेवा न लिखे सो क्या हेतु पिता बचन में तात्पर्य प्राणपति के सा
थ जाने को है वा प्रत्यक्ष सेवा भी लिखे बट छाया बेदका सुहाई इ
त्यादि २९ श्रं· राम जू के कैकेई बरदान तो तापस बेष बिशेष उदा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सी हैं तो धनुषबाण धारनो रथ चढ़िवो मृगया आदि कैसे बनेउ॰ कैकेई का बरदान व्याज भरि है अवतारि धारि स्वतंत्र लीला करिवो मुख्य राम ज नम जग मंगल हेतू वा मुनि व्रत ओ स्वधर्म दूनो निवाहे ३ श॰ प्रयागवा सी भरत की बड़ाई करत हैं राम गुण ग्राम मुनि वो कैसे उ॰ निज बड़ाई सुन मुख्य उपासक स्वामी के गुण समुझत हैं वा बेनी के फूल में हरि कथा से राम गुण ग्राम सुनत चले ३१ श॰ भरद्वाज के शिष्य पचासक आये और सब राम प्रेमी मुनि चारेक बटु संग दिये में का हेतु उ॰ सीता रामादि चारि बटु भी वा चार सब ते अधिक सुकृती चार वा चार बेद यथारथ गारग ज्ञाता ३३ श॰ श्रीराघव का शिव पूजन अयोध्या ओ लंका में लिये और में नाहीं सो क्या हेतु उ॰ श्रीराघव जू के कुल देव रंगजू हैं और संकट में आराध्य शंकरजू या मे अनेक प्रमाण एही प्रथम में बाल उत्तर में संकट है नहीं आरण्यादि में सीता विरह सों राम जू बिकल ३२ श॰ श्रीराघव के बन यात्रा में पग में फूल का न लगाये भरत के कहे सो क्या हेतु उ॰ राम गवन पर्यंत है ओ बसंत ऋतु भरत के यात्रा ग्रीषम में और बिरह संताप तें ३४ श॰ भरद्वाज भरत के पहुनाई में ऐश्वर्य दिखाये सो क्या हेतु उ॰ भरत के बैराग्य की परीक्षा अर्थ यथा रथ भई प्र॰ मुनि आयसु खेलबार ३५ श॰ भरद्वाज से भरत की भेट गाये महा मुनि बालमीक सो नाहीं सो क्या हेतु उ॰ भरत जी बिरही हैं राम दरशन में अति त्वरा है भरद्वाज पहुनाई वत कदाचित बिघ्न करै नातें कवि भेट न गाये ३६ निषाद राज तो यमुना तीरही सें फिरा भरत यात्रा में देखावत हैं कि ये पय सरित समीप रघुबर परणा कुटी है तो ए कहां तें जान्यो उ॰ निषा द फिरो तो बीचही ते ये वर्ष भर के भीतर कैक बार गयो वा सेवकन द्वारा प्रति दिन की खबर लगाये रह्यो राम जू के भरतागमन को पै ले बिचार पुनः निश्चय है स्वप्नन के बल हृदय स्वभारे लखे या में क्या हेत उ॰ लक्ष्म मण राम प्रेमांध हैं राघव का कलेश नाहीं सह सकत प्र॰ मातु पिता नहिं जानउं काहू ३८ ॥ इति अयोध्याकांड शंकावली ॥ अथ आरण्य शंका लक्ष्मण जू प्रथम निषाद को ज्ञान बैराग्य भक्ति उपदेश कीन्ह फिर राम जू से फिर षट प्रश्न किये को क्या हेतु उ॰ सब बात के ज्ञाता भी बड़न को प्रश्न करते हैं वा आगे रघुपति ललित नर लीला करेंगे सब बात पूछ राखें नातें मो ह न होय ३९ श॰ सूर्पनखा तो परम सुंदरी बनके गई लक्ष्मण जू रिपु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भगनी कैसे जानी उ॰ अगस्त के बचन हैं वा सूपनखा के बचन तें तीन लोक मैं खोजेउं नाहीं मिला तातें अबलगि कुआरी रही इत्यादि बचन ४० राम जू सूपनखा ते लक्षमण को कुंवारे कहे ए तो बिवाहे हैं उ॰ हास्यरस और बिवाह राजनीति आदि में मृढ का दोष नहीं कुमार अवस्था ४१ श॰ काम लोभादि कोई रीति सों जीव सन्मुख जाय ईश्वर त्याग नहीं करत तो सूपनखा कैसे कर त्यागी बिरूप करि उ॰ सीता विरोधनी अति वृद्धा शत्रु भगनी रही ४२ श॰ मारीच तो कपट मृग रहा ताको चर्म राम जू कैसे ल्याये उ॰ प्रभु सत्य संकल्प हैं तातें मृगै तन रहा प्र॰ रामकीन्ह चाहैं सो होई ४३ श॰ मृगछाला लाये कि नाहीं यह कछु कवि न लिखे सो क्या हेतु उ॰ जेहि प्रिया के अर्थ चर्म ल्याये सो चोरी गई तातें कवि चर्म ग्रंथ में प्रगट न कहे अवसर पाइ के कहे प्र॰ तापस रुचिर सुदल मृगछाला ४४ श॰ रावण तो मन में अनुमान कीन्ह गीधराज सुनत धायो यह कैसे बने उ॰ सुनत पद में रावण कछु कटु बचन कहे यह जानव। ४५ श॰ राम जू गीधराज से कहे कि सीताहरण पिता सों न कहिना जो मैं राम तो कुल सहित रावण कहे गो यामें क्या हेतु उ॰ सीता हरण सों पिता के स्वर्गो में अति दुःख होइ गो रावण तो मरे पर कहे गो तातें सीता प्राप्ति शत्रु बध आदि सें अति सुख होइगो ४६ श॰ सेवरी को राम जू नवधा भक्ति कहे सो भागवत आदि ग्रंथ से विरुद्ध है उ॰ यह ग्रंथ नाना पुराण राम निगम है ॥ ४७ ॥ इति आरण्यश॰

अथ किष्किंधा शंका॥ हनूमान बिप्र रूप धरि क्षत्री को राम को माथ नायो सो क्या हेतु उ॰ राम तेज न सहि सके वा नेत्र मुख द्वारा कपट लखि परैगो तातें माथ नीचे कीन्ह ४ श॰ लक्षमण ते दूना प्रिय हनूमान को काहे कहे उ॰ लोक रीति सों कि हमारे प्राणहू तें तुम अधिक हो वा कपि के बल दुख में सहायक है लषण सुख दुख में वा लषण राम के सेवक हैं ए दोनों के सेवक वा लषण द्वारा प्रिया बियोग इन द्वारा प्राप्ति श॰ महाबीर ने ए प्रभु कैसे पहिचाने उ॰ दशरथ के जाये इत्यादि बचन तें ये बड़े पंडित हैं ५ श॰ राघव अरु सुग्रीव अनेक देव छाड़ के पावके साखी क्यों दिये उ॰ मित्रता बचन द्वारा वा गिंद्रिय को देवता अग्नि वा शुद्धता औ सपथ अरु साक्षी यों अग्नि मुख्य प्र॰ तो कृशानु सब के गति जाना। ५१ श॰ राघव एक रूप दोऊ भाइन्ह के कहे निज में भ्रम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

औ माला मेली ए सब में क्या हेतु उ॰ नरनाट्य में सब बनत है ५२ शं॰ रा
म जू प्रथम बाली बध कै एक बाण से प्रतिज्ञा कीन्ह फिर दूसर बाण चढ़ाये
सो क्या हेतु उ॰ बानर राज बाली तेहि के सहायक निवार्णार्थ बाण की अ
मोघता राम संकल्प के अधीन ५३ शं॰ राम जू सर तान के बाल के हृदय मर्म
स्थान में मार्यो जलदी न मर्यो सो क्या हेतु उ॰ राम रूप दर्शन संभाषण अं
गद सों पवन आदि हेतु राम इच्छा ५४ शं॰ जेहि शायक तें मैं बाली मारा
तेहि बाण ते मैं काहू मूढ़ को हतौं या में सत्य प्रतिज्ञा और शरणागत
पालत्व कैसे बने उ॰ वोही दिन सुग्रीव आय आय मिले ५५ शं॰ और
दिशा में छोटे बानर सात समुद्र पार गये दक्षिण में सब सुभट नहां निज
निज बल कहे अंगद आदि वे में संशय कहा सो क्या हेतु उ॰ अति बली रा
वण को भय वा गुप्त मुद्रिका देन आदि हनूमान को जानत हैं इति किष्किंधा
शंकावली ॥ अथ सुंदर शंका ॥ महाबीर अशोक बाटिका में सीता रह
व संपाती से सुना रहा महल में खोजे काहे गये उ॰ अशोक बाटिका इन्ह
की नहीं जानी यातें बिभीषण कहैं गे ५७ महाबीर के लंका जात पुर्ष बा
धक न मिले तीन स्त्री ए मिली सो क्या हेतु उ॰ भव सागर के पार जात मु मु
क्षू के तीनो लोक के स्त्री बाधक स्वर्ग की सुरसा पाताल की बासनी सिंहि
का मृत्यु लोक कै लंकिनी ५८ गयो दशानन मंदिर माहीं दुइ भ्राता के एक
एक शिर याके दश कयों भये उ॰ ब्रह्म बिचार कीन्ह बिद्या १४ हमारे चत्व
चार दश विद्या के अर्थ दशानन कीन्ह यह भाव मुरारी नाटक में वा परमार्थ
रामायण में रावण मोह रूप है दश इंद्रिय आनन है ५९ शं॰ राम लक्षम
ण तो राक्षसी माया तें बन गये और माया ते असत्य नहिं जादू यह कैसे
उ॰ सुंदरी में राम नाम है नामदूनो ब्रह्म ते बड़ा है ६० शं॰ सुग्रीव को बाल बध
करि राज दीन्ह और बिभीषण को रावण जीवत तिलक सारे यामें क्या हेतु उ॰
सीता जी के धैर्य अर्थ वा जीवत शव सम चौदह प्राणी वा निशाचर हीन करौं
महीं या प्रतिज्ञा तें ६१ शं॰ समुद्र राम दूत के तो मैनाक द्वारा सेवा कीन्ह और राम
के तीन दिन बीते न आयो न सेवा या में क्या हेतु उ॰ दूत का पराक्रम देखवा और राम
के नरनाट्य बचन तें भ्रम भयो वा साठ हजार उत्तर तट वासी आभीरों के बध में
तात्पर्य है। ६२। इति सुंदर कांड शंकावली। अथ लंका कांड शंका। समुद्र
के यह पार शंभु थापना में क्या हेतु। उत्तर सब तीर्थ में समुद्र औ अष्ट वैकुंठ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंतर्गत द्रविड़ देश जान कै वा रावण शंभु भक्त है शंभु के एहि पार राख जाते उ
स्का पक्ष करैं ६३ शं० पहले सेतु के हेतु तीन कहे जलधि १ नलनील २ राघव ३ से
तु बांधे पर श्रीरघुबीर प्रताप तें पाषाण तर सो क्या हेतु उ० और उपाय साधारण
मुख्य हेतु सर्व शक्ति युत ईश्वर वा मारत लरत सुभट विजय मालिक राजा ६४
शं० सेतु बांधकै फेर तीन मार्ग कहे सो क्या हेतु उ० भव सागर पार के तीन मार्ग
कर्म ज्ञान उपासना ३ जलचर कर्म मार्ग आकाश निरालंब ज्ञा० सेतु सम उपासना
शं० सुबेल पर राम जू के सयन औ सिथलता कहे और रावण के नृत्यादि औ राज
श्री सो क्या हेतु उ० राघव बिरही वह राज श्रीयुत वा राम जू देवी संपति युत शांत
आसुरी संपति वालो वह चंचल वा राम के रावण कछु मालनहीं जग महं सखा नि
सा वा छिपाइ कै श्रीराम कहे सो चंद्र वर्णन औ छल भंग से अस्पष्ट ६६ शं०
फिरें राम सीता में हारी सीता हारने वारेए कौन उ० राम निंदा सुनि रोष तें साहस
वा राम प्रताप समुझ कै ६७ शं० लक्ष्मण के प्रथम शक्ति लगी तब बड़ो दुख बढ़ो
उपाय दूसरी शक्ति में कछु नाही या में हेतु उ० प्रथम में नरनाट्य दूसरे में ईश्वर
ता बालपन की भूमि औ दीनता यथा संख्य ६८ शं० महाबीर राम कार्य के अर्थ
औषधी लेने चले नहीं अनेक दुःख पाये मरते बचे सो क्या हेतु उ० स्वामी के आगे
चल आवि अभिमान तें चले ६९ शं० माया सर में मकरी कहां रही उ० सर तो
पूर्व को रह्यो रचना बिशेष माया तें एही हेतु मूल में बर पद दीन्ह प्र० सर मंदर
बर बाग बनावा ७० शं० राघव लषण को सहोदर कहे पुनः निज जननी के एक
कुमार कहे यह कैसे बने उ० सहोदर प्रताप तें प्र० प्रभु प्रलाप सुनि कान वाचरु
तें वा पिता संबंध तें वा कौशिल्या उदर में लषण भी प्रथम रहे बल देवकी नाईं
प्र० शेष उपनिषद एक कुमार एक पद से मुख्य ७१ शं० बिभीषण राम शरण
भये पर कुंभकरण के पांय जाइ परे सो क्या हेतु उ० भेद करि मिलावै सो अर्थ
वा निज वृत्तांत कहि शुद्धता अर्थ ७२ शं० अंगद हनूमान सुभट शिरोमणि सो
मेघनाद के कोप के मारे वा को धावन औ मरै न तब फिर चले औ कुंभ कर
ण रावण १ मुष्टिका से भूमि में गिरे या में क्या हेतु उत्तर एके और को बिजय कहे
तो ए शोभा नहीं होय वा मेघनाद के उत्कर्ष तें लषण के उत्कर्ष में तात्पर्य ७३
शं० रावण कुंभकरण के बाण द्वारा लंका में पठायो औ मेघनाद के हनूमान
लंका द्वार पर धर आये सो क्या हेतु उ० लषण के मेघनाद सम शत कोटि योधा
न उठाए और मेघनाद को एके दास हनूमान उठाय लंका द्वार पर धरे यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उत्कर्ष ७४ शं· बिज्ञानी बिभीषण समर में बिकल होइ कै रथकी इच्छा क
री सो क्या हेतु उ· नर नाट्य देख भूले रहे राम जू परमारथ उपदेश तें पुनः
सावधान कीन्ह जैसे अर्जुन प्रति गीता ७५ शं· शिवजू आरण्यै ते ८७ हजार
बर्ष समाध मैं रहे हमहूं उमा रण चरित्र देखे यह कैसे बने उ· ईश्वर अनेक रूप
तें समर्थ ७६ शं· प्रतिज्ञा तौ प्रति बिंब कै ताको जरिबो कहै तौ पतिव्रत कैसे ब
ने उ· सत्य सीता कै प्रगटै में तात्पर्य प्रति बिंब को बिंबमें लय ७७ शं· बिभीषण
पुष्पक कुवेर को न दियो राघव को दियो सो क्या उ· बर्ष १४ में थोरिक दिन वाकी रहे भरत
देखवे की अति जलदी जानी पुनः राघव कुवेर को दिये ॥ इति लका शकाव·
अथ उत्तर शंकावली ॥ पहले महाबीर के बचन सुनि भरत बोले नहीं दूसरे
बचन में बोले सो क्या उ· दूसरे में बिशेष रिपु रण जीत सीता अनुज सहित
प्रभु आवत पहले में यह नाहीं ७९ शं· जिन्ह कपिन्ह को निज देह गेह आदि
सों अधिक प्रिय कहे ते बिदा किये जे सामान्य प्रिय कहे ते राम जू समीप राखे
यह कैसे उ· नीति बिचार तें वा प्रीत मुख्य चाहिये दूर समीप व्योहार गौण ८
शं· दुई सुत सीता जाये पुनः दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह करे और राम जी को
नाम न लीन्ह सो क्या उ· भरतादि के पुत्र अयोध्या में भये तेहि तें तातें पिता
नाम तें ख्यात सीता के पुत्र वाल्मीकि आश्रम मैं नैहर के पुत्र भये तें कंन्या ना
म से फलानी के बेटा भयो है मुनि के सीता जू में कन्या भाव गीतावली में प्र
सिद्ध ८१ शं· अंगद अनेक भांति दीनता भाषे कृपाल राघव पास मैं न राखे
सो क्या उ· राज गादी इन की परंपरा भ्रष्ट न होवे ८३ शं· शंकर जू भुशुंडी
से कथा प्रत्यक्ष रूप तें न सुने मराल तनु से सुने सो क्या हेतु उ· सब श्रोता मरा
ल देखे वा गुप्त रूप तें कथा स्वाद अधिक वा शंकर भुशुंडी आचार्य हैं प्रगट
मैं संकोच वा सत असत का निर्णय मराल सों ८३ शं· गरुड़ जू भुशुंडी प्रति
कहे महा प्रलय में भी तुमारो नास नाहीं सो कैसे उ· लोमस बरदान तें प्र·
काम रूप इच्छा मरण इत्यादि कबहूं काल न व्यापिहि तोही यह श्रीराघव ब
रदान वा उपासना मत में भगवत भागवतादि सब नित्य ८४ शं· राम उदर में
भुशुंडी के अनेक कल्प बीते वाहर दुइ घरी सो क्या उ· राम प्रेरित यामें सब
बनत है ८५ शं· भुशुंडी के मोह से भरतादि अनेक रूप देखे राघव एकै
रूप है तो भ्रातादि नित्य कैसे बनैंगे उ· कौतुक के भरतादि में नित्य बिचार नाहीं
८६ शं· लोमस के प्रकरण में बिना आज्ञान द्वैत होते नाहीं और शिवजू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भुशुंडी को प्रमाण हैतही कहे सो क्या उ० भक्ति रहित ज्ञान को अनादर भ
क्ति सहित को आदर दूनो पक्ष में यथा संख्य प्र० निज प्रभु मय देखेयज
गत दृत्यादि ८७ शं० ज्ञान सिद्ध भये पर ग्रंथि खोलव लिखे वाकी कौन ग्रंथि
रही उ० अभ्यास की दृढ़ निवृत्ति में तात्पर्य ८८ प्र० औरें एक गुप्त मत दृत्या
दि ८९ शं० पाछे कौन गुप्त मत कहे जाते यहां औरें गुप्त मत कहत हैं औ
र हाथ जोरे में का भाव अरु शंकर भक्ति साधन और राम भक्ति साध्यके
कवार ग्रंथि कार लिख आये पुनः दूहां काहे लिखे उ० अद्वैत मत में ज्ञान
बिना मोक्ष नाहीं यह सिद्धांत वाको गौणा करि भक्ति से मोक्ष और भक्ति
के आधीन ज्ञान विज्ञान यह गुप्त मत पाछे कहे वैठे गुरु सुनि अरु द्विज सज्जन
या प्रमाण से सभा में मुख्य गुरु तेहितें करजोरे वा रामजू को शील हेतु वा धर्म
के अंगी करने को तात्पर्य ग्रंथकार वर्तमान समयमें परस्पर शैव वैष्णवन का
महा विरोध विचार के परम धाम यात्रा के अंत सभा में श्रीराम वचन द्वारा
शंकर भक्ति मुख्य साधन श्रीरामभक्ति साध्य फल यह सिद्धांत किये या
को कोई विरले जानत हैं तातें गुप्त कहे या रीति से कछु संदेह नहीं है प्र०
बहुत जन्म के सुधि मोहि आई दृत्यादि ९० शं० काजन्मांतर स्मृति रहती है
पुराणन में तो इतिहास लिखा है परंतु इतिहासन में तात्पर्य है कि जो जल
जल में मिले वा थलका थोही फिर आवेगा एही ते जीवन में अनेक
वाद हैं। काल भी एक है परंतु केतना विस्तर हीन है सो चारें युगन के व्य
वस्था में ख्यात क्या चारों युगन में धर्म ये वी चले हैं कुंडलिया ॥ प्रथम का-
ल एकै रह्यो बहु विधि किमि कै जाइ युग सूक्ष्मस्थूल सुनसुत एकै दर-
साय आय गत अंक न देखवो एकै नव गनि जाय दशा फिर शून्य परे खो
ढोलयंत्र इति बेद युग कालहि अंतर खोल पितामह एकमें कवहु युग मन्व-
तर ९ श्री स्वामीजी कपट कही प्रभु चार युगन के सतयुग ब्रह्मा चहुं मुख
चारों बेद रहे त्रेता हापर बिष्णु जीव आनंद लहै २ रुद्र आय कलि कै के
चौदह भुवन रहै जीव लहा बिश्राम जहां असभाव अहैं २ सुख नें बिनु
साधन जे निर्मल ज्ञान चहैं सो कलि के दोषन को नित मन लाइ गहैं गुण
मैं कलि को रूप लोक बिपरीति कहे देव दया बिन कैसे केउ गुणहि गहैं अब
कलियुग आवा घट घट पातक छावा कलि को प्रथम चरण जिन जानों दा-
पर अध को है चरण बखानो प्रथमहि को तिसरो कर मानों चौथो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बजावा झूठ पखड अकर्म अदाया पाप चरण को चौखल खाया चरण धर्म को एक बचाया सोई बीज बनावा २ ज्ञान योग जिव लेइ पराने धरम करम के रूप हे राने कलि के उर साधन थहराने नामैं पार लगावा २ नाम प्रताप स दोत जागा जाके हर कलि को तम भागा बाढ़त देव चर्ण अनुरागा जासो यश श्रुति गावा ४ बहुत जन्म इत्यादि लिख आये जीव कै जन्म नाहीं होत और चारि अवस्था मैं जन्म रूप भेद पाया जात है जैसे बाल वृद्ध इत्यादि कोई सिर्फ लड़का देखे होइ फिर दूसरी अवस्था में जो देखे गा सो नहीं पहचाने गा और जन्म संसार का नाम है और चारों युग का जो भेद कहते हैं सो प्रमाण तो समान जानव याही ते धरमन में बिरुद्ध भासत है जैसे समान औ बिशेष सो सब मतन में सामान्य बिशिष्ट पायो जात है औ विशिष्ट में अनेक विरुद्ध देखो परै है जैसे मांस भक्षन मैं विंध्य के दक्षिण वासी न को आज्ञा उत्तर वासी पतित होत हैं हनन धातु तौ जीव में चरितार्थ नहीं होत जैसे घट मठ आकाश का नाश पावत है याही ते जीव व्यापक जानो जात है और जन्म सूक्ष्मस्थूल शरीर कर के भासतु है जैसे ८४ लक्ष योनि जन्म परमित कियो सो संस्कार और काल को धर्मन को मुख्य जान वो साम आयो दो॰ मान युक्त मानस सुखद शंका रहित उदार बोध रहत निज मोह बस शंका करत उदार २ मानस मान अनेक युत मानी मन गम नाहिं। मम साहस शंकावली क्षमव साधु महि माहिं ॥ २॥

इति सप्त कांड शंकावली संक्षेपः ॥

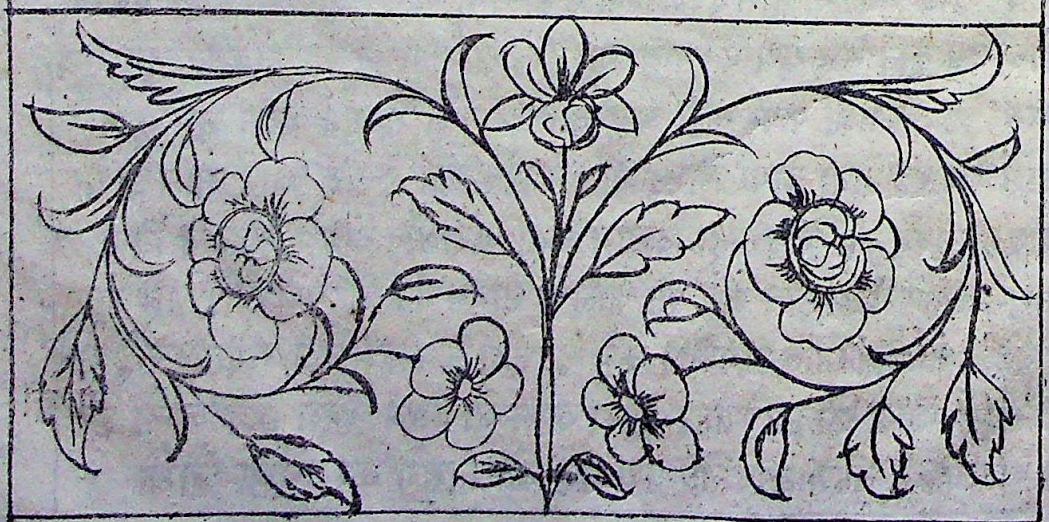

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ विश्राम अंग प्रारम्भः ॥

बिश्राम नाम धर्यौ ताको हेतु दोहा बिषै आप आकाश महं मन भटका जिमि
चंग। यहि भू उत्तर बिचार मग प्रेरक कर थिर अंग १ अथ रामायण के परमार्थ
पक्ष को बिचार। दो.। रामायण द्रुम मोक्ष फल गायत्री गउ बीच राम सु रक्षा अंकु
रित बेद मूल शुभ बीज २ बेद बेद्य परपुरुष भो दशरथ तन यह धार बालमीक
ने वेद भो रामायण अवतार ३ कुंभज मुनि निज संहिता माहीं कह्यो अनूप रामायण
अरु वेद को भिन्न न जानो रूप ४ भक्तमाल वर ग्रंथ में कीन्हो यह निरधार बालमी
क तुलसी भये कुटिल जीव निस्तार ५ वेद मूल हृद तें चली कथा भूमि के द्वार आत
म ज्ञान तरंगिनी पान करत सुख सार ५ वार्ता यातें गूढ़ाशय वेद रूप यह रामायण
कथा भाग ते सगुण लीला प्रति पादन करतु है। अरु अंतर आशय तें परमार्थ पक्ष
ऐश्वर्य छिपाइ कै कहत है यथा मानुष देह ब्रह्मांड जानो प्रवृत्त मार्ग सोइ लंक दुर्ग
सो मन रूप मया सुरने रच्यो है नाना मनोरथ ता लंका में सुंदर मंदिर समूह जानो
अविद्या समुद्र है सो राग द्वेष आदि मकर नक्र सर्पन तें पूरण भयंकर विनीर्ण अ
थाह अति दुस्तर है अनेक संकल्प विकल्पता में भंवर है बिषय आसा अंब कत
रंग हैं मोह रावण है अहंकार वाको भाई कुंभ करण है काम मेघनाद है क्रोध
देवांतक गर्व नरांतक लोभ महोदर दुष्ट मत्सर अति कायबीर है कपट अकंपन है द्वेष
दुर्मुख बीर मद सूल पाणी दंभ महा पार्श्व अधर्म दूषण असत्य कुंभ है पाषंडनिकु
म है असत्संग १ आलस्य २ बिक्षेप ३ आदि मोह राय के मंत्री जानो सत रज तम गुण
सेना पति जानो अयश अनर्थ भ्रम संसयादि धूम्राक्ष पूपाक्ष श्रोणिताक्ष इत्यादि
मुख्य बीर यथा योग्य जानो विद्या मद धन मद आदि अनेक मोह रावण के राक्ष
स सेना हैं ममता सूपनखा असत् वासना लोलपता ईर्षा हिंसा तृष्णा अश्रद्धा
आदि अनेक मोह भूपति की रानी हैं भृष्टता धृष्टता चिंता कृपणता कामना अनेक
बिषय आसा आदि अनंत राक्षसी जानो जीव बिभीषण है सो दुष्टन के समूह में
चिंता ग्रसित बसतु है इहां विवेक राम जू बिचार लक्ष्मण ब्रह्म विद्या सीता जू
ज्ञान दशरथ भक्ति कौशिल्या बिषय बन भंजन हार अरु प्रवृति लंका दहन
में प्रवीण जो बैराग्य सो हनूमान जानो धर्म सुग्रीव १ सत्य अंगद २ सतिसंगजा
म्बवान ३ शील नील ४ सतोष नल ५ धीरज केशरी ६ अभ्यास गंध मादन ७
जप तप संयम श्रवणनि दिध्यासना आदि को मोक्ष के सब सावधान कुमुद १
द्विविद २ मयंद ३ सरभ ४ गंज ५ गवाक्ष ६ गवय ७ ऋषभ ८ सुषेन ९ वेगदर्शी १०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आप वानर भालु वीर यथा योग्य जानो यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारना ६ ध्यान ७ समाधि ८ आदि देव वृंद जानो मोह लंकेश नें सब साभीत अरु दुखी ॥ इति संक्षेपः ॥ दो॰ चल्यो महा दल साज कै नृप बिवेक इति वीर पहिर कवच श्रुति शास्त्र को अचल महा रण धीर १ सैन साज इत मोह नृप आयो रण भूधाय। अति विचित्र सब सुभट सुत मंत्री वृध सहाय २ ठाढो भयो बिवेक नृप मनसा भूमि मझार बहुत सुभट जूझे जहां वही रुधिर की धार ३ वार्ता तब असत्संग मंत्री के मंत्र तें मोह नृप अहंकार को जगाय कै रण भूमि में पठायो सिंहनाद करत महा सेना लेइ चल्यो तासमय महा कोलाहल भयो वैराग्य सत्य धर्म आदि सब वीरन को घायल करि बिवेक राय सों महा युद्ध करत भयो तब बिवेक राय आत्म चिंतन सरतें अहंकार को शिर काट गिरायो तब सेना में महा हाहाकार भयो दो॰ समाचार सुनि मोह नृप व्है गयो निपट उदास। शोक अगिनि उर में जरत दीरघ लेत उसास १ वार्ता उतते मोह को सुत महाबली अति धूर्त मदन वीर महा सेना लेइ चढ्यो इततें बिवेक राय की आज्ञा तें बिचार कुंवर वैराग्य सत शीलादि वीर सेना ले चढो परस्पर महा युद्ध भयो मोहन सोषन उच्चाटन आदि अनेक बाणन तें बिचार कुंवर को मारयो ता पाछे असत्वासना बरछी उर में मार कै बिचार को मूर्छित कियो दो॰ तब वैराग्य बिचार करि दीनो सतो अनूप अहो बंधु शोचत कहा सोधो शुद्ध स्वरूप १ जग मिथ्या रज्जु सर्प वत सत्य ब्रह्म निरधार क्षुद्रानंदन चित धरो हरो अनंग विचार २ वार्ता तब बिचार वीर सावधान होइ कै मदन को ललकारयो दो॰ रे निलज्ज पापी कुटिल दुरबुद्धी धिक् तोहि कहा वस्तु ले वस करत लेत कृपण जन मोहि १ वार्ता या रीति तें परस्पर प्रचारत पुनः महायुद्ध भयो तब बिचार वीर ने मदन महा भट को मार गिरायो दो॰ समाचार सुन मोह नृप भयो सो निपट अधीर हृदय दाह अति शय भयो विलपत कंप शरीर २ गई आस मोहि राज्य की मरो पुत्र वर वीर कुलमंडन अति काम सो दूजो वीरन धीर २ वार्ता तब अधर्म अरु असत्संग आदि मंत्रिन्ह के मंत्र तें सजग व्है कै मोह नृप बिवेक राय सों महा युद्ध करत भयो दो॰ उद्ध युद्ध भो परस्पर सो वरणयो नहिं जात कबहूं ववत बिवेक नृप कबहूं मोह सकात १ राजा मोह बिवेक को युद्ध भयो बहु काल नृप विवेक बल अधिक लहि भो मन मोह बिहाल २ श्रवण मनन निध्यास सवर निज आयु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धरे हाथ गुरु श्रुति बचन प्रमाण सर हने मोह के नाथ ३ मरो देखि नृप मोह को बहुतक कटक पराइ बहुत सुभट जूझे तहां पाछे धरयो न पाय ४ वार्ता मोह नृपति को रण भूमि में मरो देखि ममता तृष्णा चिंता ईरषा आदि नारि अ-ति शोक युत बिलपि करत भई इहां दोहा । सत्य शील वैराग्य लौं मुदित सक-ल परिवार सुर नर मुनि जय जय कियो बाढ़ो मोह अपार १ वार्ता जीव स्वरा-ज्य पायो तब धर्म सत्य वैराग्यादि बीरन सहित अरु बिचार बंधु सहित बिवे-क राय ब्रह्म विद्या लेइ के निज राज धानी में अकंटक राज्य करत भयो बिवे-क चक्रवर्ती भूपति को जब ते प्रताप रवि उदय भयो तब ते काल कर्म गुण स्व-भाव कृत दोष दुख काहू को न भयो तीनों लोक में प्रकाश भयो तम कहूं न र-ह्यो अविद्या निसा नाश भई अघ उलूक छिप गये क्रोधादि कैरव सकुचे मत्सर मानादि चोरन को अभाव भयो सुख संतोषादि कोक गये विगत शोक भये प्रबोध चंद्रोदय नाटक आदि सद ग्रंथन के संम्मत से यह परमारथ पक्ष अति दृढ़ परम प्रमाणिक जानो और नाटक अनेक दोष गुण के प्रधानता क-रके यथा विवेक मोहादि करके नाम अनेकता नाम में शंका न चाही ॥

॥ इति प्रमाण श्रीतुलसीकृत बिनय पत्रिका ॥ यथा देव देहि अवलंब कर कमल कमला रमन दमन दुख समन संताप भारी ज्ञान रवि केस ग्रासन विधु तुदं दलन काम करि मत्त हरि दूषनारी १ देव बपुष ब्रह्माद सु वृत्ति ल-कापति दुसा रचित मन्द दनुज भय रूप धारी विविध क्लेश अति रुचिर मंदर निकर सत्व गुण प्रमुख त्रय कटक कारी २ देव कु नृप अभिमान सागर भयंकर घोर विपुल अवगाह दुस्तर अपार नक्र रागादि संकुल मनोरथ अकल संग संकल्प वीची बिकार ३ देव मोह दस मौलि तदभ्रा-त अहंकार पाकारि जित काम बिश्राम हारी ४ देव द्वैष दुर्मुख दंभ पर अकंपन पट दर्प मनु याद मद मूल पानी अमित बल परम दुर्जय निशाचर चमू सहित षट वर्ग जो यातु धानी ५ देव जीव भव दंघ्रि सेवक बिभीषण बसत मध्य दुष्टाटवी ग्रसित चिंता नियम जम सकल सुर जोग लो केश लंकेश बस नाथ अत्यंत भीता ६ देव दीन उद्धारण रघुबर्य करुणा भवन समन संताप पापौघ हारी बिमल बिज्ञान विग्रह अनुग्रह रूप भूप बर बिबु-ध नर्मद वरारी ७ देव विश्व बिख्यात विश्वेश विश्वायतन विश्व मर्याद आलारि गामी ब्रह्म बरद देव वागीश व्यापक विमल विपुल बलवान नि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाण स्वामी २ देव सर्व मेवात्र त्वद्रूप भूपाल मणि व्यक्त मव्यक्त गत भेद
बिज्ञो भुवन भव दंस कामारि बंदित पद द्वंद मंदाकिनी जनक जिष्नो ३
देव प्रकृति महत्तत्व शब्दादि गुण देवता व्योम मरु दग्नि अवलोकु उर्वी व
हि मन इंद्रिय प्राण चिंतातमा काल परमाणु चिच्छक्ति गुर्वी ४ देव आ
दि मध्यांत भगवंत त्वां सर्व गत मीश पश्यंति ते ब्रह्म वादी यथा पट तंतु घट
मृत्तिका सर्प स्वर्ग दारु करि कनक कट कां गदादी ५ देव गूढ़ गंभीर गर्व
घ्न गूढ़ार्थ वित गुप्त गोतीत गुरु ज्ञान ज्ञानाज्ञ यज्ञान प्रिय प्रचुर गरिमा गार
घोर संसार पर पार दाता ६ देव सत्य संकल्प अति कल्प कल्पांत कृत कल्पना
तीत अहि तल्प वासी बनज लोचन बनज नाभ बन दाम बपु बनचर ध्वज कोटि
लावण्य राशी ७ देव सुकर दुष्कर दुराराध्य दुर्व्य सन हर दुर्ग दुर्द्धर्ष दुर्गार्ति ह
र्ता बेद गर्भर्भ का दभ्र गुण सर्वाक पर गर्व निरबाय कर्ता ८ देव भक्त अ
नुकूल भव शूल निर्मूल करि तूल अघ नाम पावक समान नरल हृल्ला तामी
तरणि धरणि धरन सरनि भय हरण करुणा निधान ९ देव वृहल वृंदार का वृं
द वंदारु पद वंदि संदार मालोर धारी पाहि माही स संताप संकुल महा दास
तुलसी प्रणत रावनारी।१०।देव संसार कांतार पति घोर गंभीर घन महान तरु
कर्म संकुल मुरारी वासना वल्लि पर कंटका कुल बिपुल निविड़ विटपाटवी
कठिन भारी ११ देव विविध चित्त वृत्ति खग निकर सेनो लूक काक कट गृध्र आ
मिष अहारी अखिल खल निपुन कुल छिद्र निरखत सदा जीव जन पथिक
मन खेद कारी २ देव क्रोध करि मत्त मृग राज कंदर्प मद दर्प वृक भाल अ
ति उग्र की महिष मत्सर क्रोध सूकर सूर फेरु कुल दंभ मार्जार धर्मा ३ देव
क प न मर्कट बिकट व्याघ्र पाखंड दुखंद मृग व्रात उत्पात कर्ता। हृदय
अवलोकि यह शोक शरणागत पाहि मां पाहि भो विश्व कर्ता ४ प्रबल अ
हंकार दुर्घट महीधर महा मोह गिरि गुहा निविडांध कारं चित्त वैताल म
नुजाद मत्त प्रेत गण रोग भोगोघ वृश्चिक विकारं ५ देव बिषय सुख लो-
लसा दंस मसकादि खल झिल्लि रूपादि सब सर्प स्वामी तव आश्रित तव वि
घन माया नाथ अंध भय मद व्यालादि गामी ६ देव घोर अवगाह भय आप
गा पाप जल पूर दुःप्रेक्ष दुस्तर अपारायक षड़ वर्ग गो नक्र चक्रा कुल कल
शुभ शुभ नीर धारं ७ देव सकल संघट्ट पोच शोच बस सर्वदा दास तु
लसी बिषम गहन गस चापि रघुवंश भूषण कृपा करि कठिन काल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विकराल कलिकाल त्रस्तं ८ प्रमाण श्रीस्वामी जू राम चरित कहु का
हि लगाय मुनि मति हूं भरमाय त्रिभुवन भावै प्रगट होइ कै राघव जन्म
कहाय भावन हूं को राम प्रकासत ए तो पद ठहराय १ कोप मुनिन की
सिखा रूप धरि प्रगट जनकपुर आय राम प्रिया बन काज साधि पुनः
बन गें गयो समाय २ राम सिया को जनम करम नहिं नितहीं उदित सु
भाय ते कैसे जनि हैं ते मदिरा अंचेरहैं बैराग्य ३ देव भाव बानर भालू
तन धारि कै भये सहाय त्रिभुवन भावै त्रिभुवन धनी बन रहा अवध मैं
छाय कुंभकर्ण अहंकार राम गर्व प्रहारी जाको छुवत गिरत ब्रह्मादिक
ज्ञानी होत असार परब्रह्म हूं निर्गुण भासा लगत अकारह कार १ शी
श उचाई भुज बल औ हठपद गत हिछचार सब को दुख दायक अति नि
र्भय अंग अंग अपकार २ राम प्रथम ताके भुज काटे तब शिर काटप
चारि पद काटे तब हूं धर दौरत डारी सिंधु मझारि ३ तजै उचाई मान
गरै तम धरिये दीन बिहार देव मुदित श्रीरामचंद्र पर बर्षत सुमन अ
पार ४ इंद्र जीत जो काम है सबहीं सतावत छल कै मारत परगट मारत वी
रन मैं सरनाम जाको नाम सुनत ही कांपैं ब्रह्मादिक सरधाम मुनि व्रतहिं
नसावत १ ज्ञानी योगी बैरागिन को मोल लेत बिनु दान ज्ञान ध्यान
सब बिसर जात है चमकत आछो चाम तब नाच नचावत लषण यती जा
हिर हनुमंतौ ब्रह्म चरण विश्राम काम शत्रु इनहीं कौ पठवा काम हननको
राम तव मा मन भावत ३ इंद्र जीत छल बल करि हारा लक्षमण एक बा
णतें मारा बाज रहाहै देवन गारा मिटा जगत को घाम लागे गुण गावत
४ इत्यादि दोहा बेद रटत पुनि शास्त्र सब आगम सकल पुराण एक वा
क्य ता सबन के बेद्य एक भगवान १ अज्ञ दशामहं बिषमता विज्ञ समै न
बिरोध तहं दुविधा कहं पाइयतु जहं निज पूरण बोध २ जैसें लहरि समु
द्र मैं पृथक भाव दरसाय पलट मिलत जब सिंधु में एक भाव व्है जाय ३
जैसे पुरवासी सकल कहूं बैर कहुं प्रीति कठिन परै जब नगर को तव सब
एकै रीति ४ एक पिता के पुत्र बहु करत परस्पर रारि सुनि निंदा निज तातके
एकहि होंहिं बिचारि ५ एक नगर के बहुत पथ सकल कुटिल बल जात
अंत प्राप्य एकै नगर नहिं बिरोध कछु तात ६ जैसे नाना देस तें चली नदी
बहु भांति भई अभेद मिल सिंधु में जैसे मति की पांति ७ आदि मध्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अरु अंत लौं ज्यों तरु बीज सरूप लघु दीरघ त्यों ग्रंथ सब व्यापक वेद्य अनूप
८ निगमागम बहु मत कहत यदपि कांड त्रय भेद एक वाक्य ताके भये
एकै प्राण अखेद ९ प्रकृति दोष तें मोह तम छायो मति संसार। जल्पित क
ल्पित भेद बहु मत मदिरा मतवार १० गुरु श्रुति बचन बिचार रवि उदै दोष
निर्मूलाएक वाक्य ता ज्ञान लहि मिटत मोह मय शूल ११ वार्ता यह ले
रामायण की शंका में एक सत्यत्व दूसरो प्रसंग भेद में लिखासो सत्यत्व
में नाटक रीति कर के और प्रसंग काल युगादि की एक वाक्य ता करके क
ल्प भेद औ देवन में अभेद तें संशय नहीं जानो गयो सोरठा रामायण सि
द्धांत ज्ञान भक्ति संपुट कियो नाम रतन विख्यात प्रेम भक्ति मणि लेन तें॥
वार्ता प्रथम प्रकास में ज्ञानभक्ति संपुट में नाम रत्न को स्थापन कियो
दोहा। स्थान सर्ग बिसर्ग पुनि पोषण आदि बिचार दस लक्षण सु पुराण
के ग्रंथ महिं कहे उदार २ वेद अर्थ के बोध कहं अंग शास्त्र षट मान। शा
स्त्र अंग में सबन को भाष्यो अर्थ सुजान ३ पूरब मीमांसा बिषे धर्म तत्व
प्रति पाद्य स्वर्गादिक फल धर्म को ज्ञान प्रयोजन साध्य ।४। वैशेषिक शा
स्त्रहि कियो सु मुनि कणादि अनूप। सप्त पदारथ ज्ञान फल भावा भाव स
रूप। न्याय शास्त्र गौतम ऋषि भाष्यो तर्क प्रधान प्रमाणादि षोड़श
अर्थ बोध प्रयोजन जानि ६ योग शास्त्र पातंजली मुनि कीनो सुख कंद
जावत वृत्ति निरोध तें दूटत भव को फंद ७ सांख्य शास्त्र को बिषय सुख
प्रकृति सु पुरुष विवेक हानि विविध दुख मुक्ति सुख कपिल मुनि मति टेक ८
वेद व्यास वेदांत को आचार जबर लेखु जीव ब्रह्म के एक ता बिषय मो
क्ष फल देखु ९ बहु शास्त्रा सारखी सुखद वेद अपौरुष वाक चार वेद
त्रय कांड फल मोक्ष अवांतर नाक १० तंत्र भाव में शिव कियो यंत्र मंत्र
मति पाद्य शंभु शक्ति के ज्ञान तें मोक्ष आदि फल साध्य ११ वार्ता द्वि
तीय प्रकाश में पुराण शास्त्र वेद तंत्र को सिद्धांत अर्थ लिख्यो दोहा।
भरत आदि साहित्य के आचारज मति चारु कथित तासु दस कर्म फल
रामायण सिंगारु १२ वार्ता तृतीय प्रकाश में यावत्काल व्यंग निरूप
न कियो चतुर्थ प्रकाश में प्रसंग अंग कर्के यावत् रामायण तात्पर्य
और छंद दोहा चौपाई को नेम कियो दो० लंका शंका दहन को
हनुमत बुद्धि उदार मुख्य प्रश्न उत्तर लिखो समुझे सुमति उदार १३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वार्ता पंचम प्रकाश में मुख्य मुख्य शंका समूह को समाधान कियो दोहा। अमर सिंह आदिक जिते कोश कार सउदार बिषम शब्द के अर्थ को परकाशक उपकार १४ वार्ता छठे प्रकाश में कोश अंग करके बिषम पदन को मुख्य अर्थ उद्धार कियो सप्तम प्रकाश में बिश्राम अंग करके नाटक रीति भाव प्रधान सें रामायण जू कथा भाग से सगुण प्रतिपादक औ अंतर आसय ते परमारथ पक्ष सत्यत्व प्रतिपादक यह निरूपण कियो औ प्रसंग के भेद में देवतन को अभेद जनाय के अनंत शक्ति प्रभु में सब अधिरुढ़ जानो चाहिये और कलियुग व्यवस्था इत्यादि समदरसायो और प्रथम लिख आये तो मुख्य अर्थ है सो एही अक्षरन सों ज्ञात हैं और जो शंका करत हैं यह जो सप्तम अंग लिख आये यातें प्रगट बोध होइ गो एतेहू में जो शंका करैं तहां प्रमाण चौ० एतेहू पर करहिं जे शंका मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका। इति दोहा। करि प्रसंग के अंग तें हरि यश हेतु जनाय यथा भानु समता लिषे खद्योतो गनिजाय १ रामायण सर सिज सरिस चहिय तत भानु प्रकाश यह प्रसंग खद्योत इव किमि कर सकत विकाश २ रामायण के अर्थ को को समर्थ मति वंत यथा सिंधु खग चोंच भरि तृप्ति लहत नहिं अंत ३ को तुलसी भाषा कवन कौन बेद को सार कौन कोश तिहिं लिलक कोवा ही कहत गंवार ४ मत्सर मद माया मदन मारे मान मरोर। रामायण जाने कहा पर धन पर तिय चोर ५ कवि को विद रघुबर भगत मानस मान सुजान की सुन सिंधु गंभीरता मंदिर गिरि पहिचान मानस पारावार को पोर वार को जान मंदिर गिरि बूड़त जहां मम मति की परमान ७ अष्टादश षट संहिता यामल तंत्र बिचार धर्मनीति श्रुति सागर हि तुलसीकृत बिस्तार॥ बरवै॥ श्री काशी पति पितु की आज्ञा पाइ द्वो गज राज कथनि नम मेल मिलाइ ८ चौ० सरल अरथ आखर की थोरी सहत प्रभाव सांत रस बोरी दूर देश दरसावन हारी। त्रैनक मग विधुवि मल तमारी॥२०॥ इति श्री रघुनाथ दास कृत मानस दीपिका टीकायां बिश्राम अंग सप्तमः ७ प्रकाशः मानस दीपिका समाप्ताः संवत १९३० कार्तिक शुक्ला ११ शनि वासर॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विज्ञापन पत्र

यह पुस्तक अर्थात् रामायण तुलसीकृत जो अति प्रसिद्ध और बहुधा देहली और मेरठ और बनारस के यन्त्रालयों में छपी है इस छापेखाने में प्रथम वार पद २ पृथक् २ करके छपी है - कि हजारों अशुद्धियां जो पहिली छपी हुई में वर्तमान थीं अनेक प्रतियों से यन्त्रालय के पण्डितों ने व्यर्थ शक्ति शुद्ध की और कोश उसका क्रिया पद सहित अति श्रम से रचना किया गया कि जिस का हाल देखने और पढ़ने वाले विचार करें गे -

उक्त रामायण के विशेष हमारे यन्त्रालय की पहली छपी हुई रामायण जो अति शुद्ध और सब भारत वर्षीय भर में अति विख्यात और प्रचलित है अबतक ५०००० पुस्तकें छपी हुई वर्तमान हैं -

विशेष इन रामायणों के एक और रामायण बहुत श्रेष्ठ और बहुत मोटे अक्षरों की जो आज तक हिन्दुस्तान के किसी यन्त्रालय में नहीं छपी मुद्रित हो रही है कि जिस को बालक और वृद्ध भी दूर से वाच सक्ते हैं जिस को दरकार हो हमारे छापेखाने से पत्र की द्वारा महसूल अदा कर के मंगा ले -

और जो इस रामायण को सौदागरी तौरपर खरीद करें गे उन को कमीशन भी दी जावे गी -

उक्त रामायणों के विशेष बहुधा फारसी, अरबी, और उर्दू पुस्तकें इस यन्त्रालय अर्थात् मुंशी नवल किशोर लखनऊ और कानपुर में छपी हुई वर्तमान हैं जिस की फेहरिस्त छपी हुई वर्तमान है जिस मनुष्य को लेना मंजूर हो पत्र के द्वारा मंगा ले और हर तरह का काग़ज़ शिलाक्षर और शीशाक्षर और फारसी और अरबी इस छापेखाने में मुद्रित हो सक्ता है -

और महाभारत भाषा जो अनेक छन्दों में काशी नरेश महाराजाधिराज की आज्ञा से कलकत्ते के किसी छापेखाने में छपी थी हमारे टैप के कारखाने में उन्नमता से छप रही है और शीघ्रही वह महासागर १८ पर्व्व सब लोगों को जो इस के इच्छिक हैं प्रगट होगा जिन को खरीदना मंजूर हो मुन्शी नवल किशोर के यन्त्रालय से दरख्वास्त करें

6424.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतिहास

"बालमीकि नारद घट योनी।
निज निज मुखनि कही निज होनी" पृष्ट २

बालमीकि जी ने राम जी से कहा कि मैं पहिले व्याधा का काम करके अनेक जीवों का घात किया करता और उनका द्रव्य हरण करके अपने कुटुम्बों का पालन करता एक दिन सप्तऋषियों से अकस्मात् मार्ग में भेट भई सो उनका भी जीव घात करने के लिये मैं तत्पर हुआ तब उन्हों ने मुझे अत्यंत आतुर समझ के शिक्षा दिया सो उनके उपदेश से आप का नाम विपरीत करके मरा मरा जपते २ मैं इस स्वधर्म गति को प्राप्त हुआ कि आप साक्षात् ईश्वर मेरे स्थान विषे पधारे ॥

जब वेदव्यास पुराणों को बनाय चुके परन्तु उन्हें संतोष न भया तब नारद जी से कहा कि महाराज इसका कारण क्या नारद जी बोले सुनों मैं पूर्व में दासी पुत्र रहा परंतु मेरी माता जिस के यहां काम करती थी वे साधु मेरे रहे उनके स्थान में साधु लोग आवें तब साधुओं का झूठा भोजन जो शेष बचे उसे मैं खाऊं और उनकी सेवा किया करूं उस से मेरी ऐसी निर्मल बुद्धि हुई और इस गति को प्राप्त हुआ अतएव सत संगति की महिमा है इस से अब तुम कुछ भगवत जस कहो तब तुम्हें संतोष होगा तब व्यास जी ने भागवत बनाया ॥

और अगस्तिऋषि ने महादेव जी से कहा कि मेरे पिता मित्रावरुण तप करते थे कि आकाश मार्ग से रंभा शृङ्गार किये जाती थी सो उनकी दृष्टि पड़ी काम उत्पन्न भया तब मित्रावरुण ने वीर्य को घट में रख दिया उसने मेरी उत्पत्ति हुई इस से मैं घटज हुआ सो ऐसी नीच बुद्धि और नीच स्थान से मैं उत्पन्न हुआ परंतु सत-संग से इस दशा को प्राप्त हुआ ॥

"सियनिंदक अघ ओघ नसाए।
लोक विसोक बनाइ बसाए" पृष्ट ९

अयोध्या में जब श्रीरामचन्द्र राजा रहे तब एक रजक की स्त्री बिना पति की आज्ञा पिता के भवन चली गई तीन दिन के उपरांत जब वह पति के गृह आई तब वह रजक बोला कि तू मेरे घर से जा मैं घर में नहीं रखूंगा मैं राम नहीं हूं कि सीता ११ ग्यारह महीना रावण के घर में रही फिर उसे अपने गृह में रख के रानी बनालिया ऐसा व्यंग वचन कह के स्त्री को निकाल दिया इस को सुन रामचन्द्र जी ने जानकी को घर से निकाल दिया और अयोध्या पुरी में बसने से रजक को सीता के निन्दा के पाप से क्षमा करके परम धाम दिया ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"महिमा जासु जान गनराऊ।
प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ" पृष्ट १०

ब्रह्मा ने सब देवतों से कहा कि प्रथम पूज्य पद के योग्य कौन है सो यह सुन सब देवता आपस में लराई करने लगे तब ब्रह्मा बोले कि तुम सब में से पृथ्वी की परिक्रमा करके जो मेरे पास पहिले आवेगा उसी को प्रथम पूज्य पद हम देवेंगे सब देवता अपने २ वाहन पर बैठ के दौडे पर गणेश जी मूसे पर सब के पीछे पड़ गए और कार्य्य की हानि समझ अत्यंत व्याकुल हुए तहां नारदजी उनको मिले और इन के परिताप का कारण सुन कहा कि तुम पृथ्वी में राम नाम लिख के उस की प्रदक्षिणा कर ब्रह्मा के पास चले जावो तब गणेश जी वैसाही कर ब्रह्मा के निकट गये और जब और सब देव भी ब्रह्मा के सन्मुख आये तब ब्रह्मा आदि सब देवतों ने मिलके श्रीराम नाम की महिमा समझ गणेश जी को प्रथम पूज्य पद दिया इस से राम नामकी महिमा है ॥

दूसरी कथा। महादेव जी ने श्यामकार्तिक औ गणेश जी दोनो पुत्रों से कहा कि जो पृथ्वी की परिक्रमा करके पहिले मेरे पास आवे उसी को हम प्रथम पूज्य पद देवेंगे सो सुन श्यामकार्तिक मोर पर बैठ के अगाड़ी गए और गणेश जी मूसे पर पीछे पड़गए तहां देरी देख के नारद के उपदेश द्वारा नाम की परिक्रमा कर महादेव के पास गए तब शिव जी ने ध्यान पूर्वक विचार कर और श्री राम नाम की महिमा स्मरण कर गणेश जी को प्रथम पूज्य पद दिया ॥

"सहस नाम सम सुनि सिव बानी।
जपि जेई पिय संग भवानी" पृष्ट ११

एक समें महादेव जी पाक बनाय थाल में परोस पार्वती को पुकारा हे प्रिया आवो भोजन करें तब पार्वती बोली कि मैं विष्णु सहस्र नाम का पाठ करके तब प्रसाद पाती हूं सो अभी पाठ नहीं किया तब महादेव जी बोले कि हे पार्वती श्री राम नाम जो है सो विष्णु के सहस्र नाम के तुल्य है सो एक बार राम नाम उच्चारण कर आय के भोजन करो तब पार्वती जी ने ऐसा ही किया तब महादेव जी इनके मन की प्रीति निश्चय पूर्वक और अपने वचन का विश्वास देखि के अति प्रसन्न होय पतिव्रता सिरोमनि किया और ऐसा भी है कि गौरी शंकर अर्द्धांगी स्वरूप तभी से हुआ ॥

"अत एव हरषे हेतु हेरि हरही को।
किय भूषन तिय भूषन ती को" ॥
"नाम प्रभाव जान शिव नीको।
काल कूट फल दीन्ह अमी को" पृष्ट ११

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब विष्णु ने कच्छपावतार लेके समुद्र को मथा तब उस में से चौदह रत्न निकले सो सब देवता प्रसन्न होय अपनी २ इच्छा के अनुसार तेरह रत्न को बांट लिया और चौदहवां रत्न जो कालकूट अर्थात् हलाहल विष के निमित्त सब देवता महादेव जी का स्मरण कर इन से कहा कि महाराज इस विष से बचाइए नहीं तो यह अपनी ज्वाला से तीनों लोक को भस्म कर देगा तब महादेव ने श्रीराम यह शब्द मुख से उच्चारण कर उठाय के पीगए उस के प्रताप से उस विषने अमृत का फल दिया कि अमर हो गए ॥

"ध्रुव सगलानि जपेउ हरि नाऊं।
पाएउ अचल अनूपम ठाऊं" पृष्ट १३

स्वायंभू मनु के पुत्र राजा उत्तानपाद के दो स्त्री थीं तिसमें बड़ी रानी के पुत्र ध्रुव हुए सो एक समय राजा छोटी रानी जिस पर राजा की अत्यन्त प्रीति थी उसके पास बैठा था उस समय ध्रुव जाके पिता की गोद में बैठ गए तब रानी ने ध्रुव को गोदी से उतार यह कहा कि मेरे पेट से जन्म लेते तब इस गोदी के अधिकारी होते इस बात को सुन ध्रुव ग्लानि से अपनी माता से जाय कहके तप करने को चले पश्चात् राजा ने आप ध्रुव को बहुत समझाया राज्य देने कहा परन्तु ध्रुव नहीं फिरे वहां नारद ने ज्ञान उपदेश दिया सो जप करके सबके परे लोक के अधिकारी भए ॥

"ब्रह्म सभा हम सनदुख माना।
तेहितें अजज्ञ करहिं अपमाना" पृष्ट २८

महादेव जी कहते हैं कि हे सती ब्रह्मा की सभा में विष्णु आदि सब देवता के साथ हम बैठे रहे सो उस समय में दक्ष तुम्हारे पिता आए सो उन्हें देख सब देवता उठे परंतु मैं और मेरे संग ब्रह्मा विष्णु नहीं उठे सो दक्ष क्रुद्ध होय उस सभा में कुवाच्य मुझे कहा और तभी से द्वेष मान मेरी प्रतिष्ठा हीन करने में उद्यत रहे और अपने यज्ञ में हमें न्योता नहीं दिया ॥

"दक्ष सुतनि उपदेसन्हि जाईं।
तिन्हफिरि भवनन देखा आईं" पृष्ट ३५

जब दक्षप्रजापति ने प्रथम बहुत से पुत्र उत्पन्न करके आज्ञा दिया कि सृष्टि करो तब वे सृष्टि के अर्थ तप करने को गये वहां नारद ने उन्ह सबों को ऐसा ज्ञान उपदेश किया कि सब के सब विरक्त होय बन में तप करने लगे दक्ष के गृह में फिर नहीं आए तब दक्ष ने कन्या उत्पन्न करके सृष्टि को बढ़ाया सो हे पार्वती नारद शिक्षा सुन के घर छोड़ के वे भिखारी हुए ॥

"चित्र केतु कर घर उन्ह घाला" पृष्ट ३५

CC-0. In Public Domain, Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आगे फिर चित्रकेतु राजा का समाचार सुनो चित्रकेतु राजा की कोटि स्त्री थीं परंतु लड़का एक नहीं तब किसी मुनि के आशीर्बाद से छोटी रानी के एक पुत्र उत्पन्न भया जब वह लड़का वर्ष भर का भया तब कोटि रानियों ने उस लड़के को विष देके मारडाला तब वह मृतक लड़के को राजा गोद में लिए विलाप करता था कि नारद जी आये राजा को ज्ञान उपदेश करने लगे परंतु राजा को ज्ञान न हुआ तब नारद जी ने उस लड़के को जिलाय कहा कि देखो तेरे मरने से राजा अति व्याकुल है तब वह बोला कि हे राजा मेरी पूर्व जन्म की कथा सुनो मैं पहिले जन्म में राजा रहा सो राज्य से विरक्त होके बन में जाय भिक्षा मांग हरिभजन करता था एक दिन एक स्त्री ने मुझे गीला गोइठा दिया उसके भीतर चिउंटी रहीं अग्नि के संस्कार से सब मरगईं सो सब चिउंटी यह तुम्हारी कोटि स्त्री हैं जिस स्त्री ने गीला गोइठा दिया रहा वह यह मेरी माता है और मैंने उस पाप से इसके उदर में जन्म लिया है सो यह कोटि स्त्रियों ने अग्नि के पूर्व जन्म का बदला लिया यह कह वह लड़का फिर मरगया और राजा चित्रकेतु राज्य छोड़ बन में तप करने को चले गये ॥

"कनककसिपु कर पुनि अस हाला" पृष्ट ३५

आगे कनककसिपु अर्थात् हिरण्याक्ष की स्त्री कयाधू जब गर्भवती रही तब नारद जी ने उसको ज्ञान उपदेश दिया सो गर्भही में प्रहलाद को ज्ञान उत्पन्न भया सोई ज्ञान से बिष्णु नरसिंह रूप धर हिरण्याक्ष का वध कर प्रहलाद को राज तिलक किया; नारद के उपदेश से दैत्यकुल का नाश भया ॥

"कस्यप अदिति महातप कीन्हा ।
तिन्हकहं मैं पूरबबर दीन्हा" पृष्ट ८३

किसी समय कस्यप अदिति ने तपस्या कर बिष्णु से यह बर मांगा कि जब २ आप अवतार लेवें तब तब हम हीं आप के माता पिता होवें इसलिये प्रत्येक अवतार में यही माता पिता हुए यहां भी दशरथ कौसल्या में इनका अंस दिखला के पूर्व बरदान को सिद्ध किया ॥

"पूछा मुनिहिं सिला प्रभु देखी ।
सकल कथा मुनि कही बिसेषी ॥ दोहा ॥
गौतम नारि स्राप बस उपल देह धरि धीर ।
चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर" पृष्ट ९३

किसी समय ब्रह्मा ने अपनी एक कन्या का नाम अहिल्या धरा जिस को परम सुन्दरी देख सब सुर मुनि मोहित हो इच्छा करने लगे तब ब्रह्मा बोले सब देवतों में जो पहिले पृथ्वी की परिक्रमा करके आवे उसे यह कन्या हम देंगे सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देवता पृथ्वी की प्रदक्षिना करने को गए और गौतम ऋषि ने पृथ्वी गौ रूप जो ब्रह्मा के स्थान में बैठी रही उस की प्रदक्षिना कर ब्रह्मा से कन्या मांग लेकर अपने घर गए तब से इन्द्र के जी में यह हुआ कि किसी प्रकार से अहिल्या के संग में भोग करें एक दिन गौतम ऋषि संध्या करने को गए तब इन्द्र गौतम ऋषि का स्वरूप धर द्वार पर पुकार अहिल्या से कहा कि हम कामातुर हैं अहिल्या ने कहा कि महाराज इस बेला में आप का ज्ञान कहां गया उत्तर दिया कि तू पतिव्रता है पति के बचन को मान तब वह आज्ञा भंग न कर सकी और कार्य की सिद्धि में तत्पर भई उसी समय गौतमऋषि ने द्वार पर पुकारा यह पति का शब्द पुनः सुन चिंता में होय क्रोप कर इन्द्र से पूछा कि सत्य बोल कौन है तब इंद्र-ने डर कर कहा अहिल्या इंद्र को बिलार बनाय छिपा के किवाड़ा खोल दिया तब ऋषि ने पूछा कि इतनी देर काहे लगी वहां अहिल्या पति से मृषा बचन बोली परंतु ऋषि महाराज छल देख कोप कर इंद्रको आप दिया कि तेरे सब शरीर में सहस्र भग हो जांय और अहिल्या को आप दिया तैं सिला हो जाय। राम चन्द्र से तेरा उद्धार होगा॥

"गाधि सुवन सब कथा सुनाई।
जेहि प्रकार सुरसरि महि आई" ॥ पृष्ट ९४ ॥

हे राम तुम्हारे कुल में एक सगर नाम राजा हुए तिन की केशी और सुमती रानी थीं परंतु पुत्र के न होने से राजा दुखी हो स्त्रियों समेत बनमें जाय तप करने लगे तहां सौ बर्ष बीतने पर भृगु मुनि के वरदान से केशी के एक पुत्र असमंजस और सुमती के साठ हजार पुत्र हुए असमंजस केशी का पुत्र प्रति दिन अयोध्या के बालकों को नाव पर बैठाय सरजू में बोर दिया करता इसमें प्रजा बहुत दुखी हो राजा के पास गई तब राजा ने असमंजस को देश से निकाल दिया कुछ दिन के उपरांत राजा अपना चौथा पन समझ के हिमगिरि पर जाय अश्वमेध यज्ञ का प्रारंभ कर दिगविजय के हेतु घोड़ा छोड़ा तहां इन्द्र छलके साथ घोड़ा चुरा कपिल मुनि के स्थान में बांध दिया तब राजा की आज्ञानुसार सुमती के साठ हजार पुत्र घोड़ा की खोज में फिरते २ कपिल मुनि के स्थान में घोड़े को बंधा देख क्रोध से परुष बचन बोले सो सुनके कपिल मुनि ने क्रोध पूर्वक जो देखा तो सब भस्म होगये और इधर राजा को जब इनकी सुधि न मिली तब असमंजस के पुत्र अंशुमान को खोजने के लिये भेजा तहां सुमती के भाई गरुड़ पक्षिराज से मार्ग में भेंट भई तब उन्होंने सब हाल कहा यह सुन अंशुमान गरुड़ के संग कपिल मुनि के पास गए उनसे बिनती कर घोड़ा ले आय के राजा से सब समाचार कहा इससे राजा बड़े सोच में हुए फिर यज्ञ पूर्ण कर कुछ काल राज्य करके प्रजा को सुख दिया फिर अंशुमान को राज्य अभिषेक कर आप सुर धाम को गए पश्चात्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंशुमान अल्पकाल राज्यकर अपने पुत्र दिलीप को राज तिलक दे गंगा के निमित्त तप करने को गए तपही में शरीरांत होगया फिर दिलीप अपने पुत्र भागीरथ को राज्य दे और सब समाचार कह बनमें जाय गंगा निमित्त तप करते शरीरांत कर दिया तब भागीरथ पिता का समाचार कुछ न पाय अपने पुत्र ककुत्स्थ को राज्य दे और समाचार कह वनमें तप करने गए तहां हजार बर्ष एक पद से दोनो भुजा उठा के सूर्य्यके सन्मुख खड़े रहे यह देख ब्रह्मा ने प्रसन्न होय के कहा कि वर मांगो तब भागीरथ ने मांगा कि गंगा जी को दो तब ब्रह्मा बोले कि गंगा का भार कौन सहेगा मृत्यु लोक को लिए पाताल को चली जायगी सो महादेव का आराधन करो वे संभालें तो हम दें तब भागीरथ ने महादेव का जप किया तब वे प्रसन्न हो भागीरथ का वचन अंगीकार कर अपने जटा को संवारा तब ब्रह्मा की आज्ञानुसार गंगा जी अति अभिमान युक्त चलीं कि महादेव के समेत रसातल को जाऊंगी परंतु एक बर्ष पर्यन्त जटा में भ्रमण गईं जटा की थाह न मिली तब महादेव जीने एक बूंद जटा में से भागीरथ को दिया तिसकी तीन धारा भईं एक मंदाकिनी नाम स्वर्ग को गई दूसरी प्रभावती नाम पाताल को गई तीसरी मृत्यु लोक में गंगा भागीरथ के साथ हरिद्वार प्रयाग काशी होके सगर के पुत्रों को परधाम भेजती समुद्र मे जाय मिली ॥

"सुमिरि सोय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत।
चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत" पृष्ट१०१

एक समय जानकी जी गिरिजा पूजन के निमित्त जाती थीं तहां मार्ग में नारद मिले जानकी ने दण्डवत करके कहा कि महाराज देवी की पूजा करने को जाती हूं तब नारदने प्रसन्न हो आशीर्वाद दिया कि हे जानकी इसी गिरिजाबारी में श्री रामचन्द्र तुम्हारे पति तुम्ह को मिलेंगे तब जानकी ने पूछा कि महाराज हम कैसे चीन्हेंगी तब नारद बोले कि इस बगीचे में जिसको देखने से तुम्हारा मन लोभित होजाय उसी को जानना कि यही मेरे पति हैं ॥

"कहं कुंभज कहं सिंधु अपारा।
सोखेउ सुजस सकल संसारा" पृष्ट ११२

एक समय किसी चिड़िये के तीन बच्चे को समुद्र बहाय ले गया तब वह प्रति दिन अपने चोंच से पानी भर भर कर बाहर फेंका करे इस अभिमान से कि समुद्र को उलच डालें अगस्तिऋषि ने यह समाचार देख उससे पूछा तब पक्षी ने कारण कहा यह सुन के दया संयुक्त उससे कहा कि समुद्र जड़ निर्दई है इसका दण्ड हम करेंगे यह कह कर चले गए किसी काल में अगस्ति जी समुद्र के तीर बैठे जप पूजा कर रहे थे कि समुद्र की तरंग इनके पास आय के पूजा की सामग्री को नष्ट कर दिया तब वह पक्षी की बात स्मरण करके तीन अंजुली में अर्थात् राघवायनमः

CC-0, In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केशवायनमः वासुदेवायनमः ऐसा उच्चारण कर पी गए वह बहुत काल तक सूखा पड़ा रहा फिर देवतों ने कुंभजऋषि से बहुत निवेदन किया तब प्रसन्न होय लघु-शंका करके फेर भर दिया ॥

"माता पितहिं उरिन भए नीके।
गुरु रिन रहा सोच बड़ जीके" पृष्ट ११८

परशुराम के पिता यमदग्नि औ माता रेणुका नहाने को गई वहां जलमें मछली को क्रीड़ा करते देख के इच्छा भई कि मैं भी घर जाय पतिके संग ऐसेही क्रीड़ा करूं सो कामातुर आय के यमदग्नि से कहा कि हमें ऐसी इच्छा है यह सुन ऋषि को कोप उत्पन्न भया तब तीन बेटे जो और थे उन्हसे कहा कि इस का मूड़ काट डालो उन्होंने आज्ञा न माना तब ऋषि ने तीनों लड़कों को भस्म कर दिया फिर परशुराम को बुलाय के कहा सो परशुराम ने पिता की आज्ञा सुनतेही झट फरसे से माता का सिर काट डाला तब ऋषि प्रसन्न होय बोले कि पुत्र वर मांग तब परशुराम ने मांगा कि तीनो भाइन समेत माता को जिलाय दीजिये सो ऋषि प्रसन्न होय चारों को जिलाय दिया औ यमदग्नि का मूड़ एक छत्री सहस्रबाहु ने काट डाला इस निमित्त सारे पृथ्वी के तीन छत्रियों का सिर उन्होंने काटा ॥

"कद्रू बिनतहिं दीन्ह दुख तुमहि कौसिला देव" पृष्ट १६५

कस्यप मुनि की दो स्त्री तिस में सर्प की माता कद्रू औ पक्षी की माता बिनता सो कद्रू ने बिनता से पूछा कि सूर्य्य के घोड़े की पूंछ कौन रंग है बिनता ने उत्तर दिया कि उज्ज्वल है कद्रू बोली नहीं श्याम रंग है इसमें दोनों ने प्रति उत्तर करके यह बात ठहराई कि इस में जो हारे सो दासी बन के रहै यह निश्चय करने के निमित्त दोनों चलीं तहां कद्रू की आज्ञानुसार सर्प जाय के घोड़े की पूंछ में लपट गए तब कद्रू ने छल से बिनता को दिखला दिया कि देखो पूंछ का रंग काला है बिनता लज्जित होय दासी भाव अंगीकार कर सेवा में रहने लगी ॥

"कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं।
स्वामिनि कहेउ कथा मोहि पाहीं॥
दुइ बरदान भूप सन थाती।
मांगइ आजु जुड़ावइ छाती" पृष्ट १६६

एक समें दैत्यों ने लड़ाई करके इन्द्र को पराजय किया तब इन्द्र राजा दस-रथ के पास आ इन्हें दैत्यों पर चढ़ा ले गए तहां कैकेई भी गई रही युद्ध में दसरथ के रथ का चक्रावलंब टूट गया यह कैकेई देख रथ पर से उतर अपनी भुजा पर चक्र का आधार कर लिया जब दसरथ महाराज ने दैत्यों को पराजय कर जय पाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तब कैकेई बोली कि महाराज रथ से उतरिये तब ज्योंही महाराज उतरे भो। कैकेई ने हाथ को खींच लिया रथ टूट पड़ा यह समाचार देख दसरथ ने प्रसन्न होकर कहा कि आज जय तेरी सहायता से हुई दो बरदान जो तू मांग सो हम देवें तब कैकेई बोली महाराज यह दोनो बरदान मेरी थाती रख छोड़िए जब मुझे कार्य्य होगा तब मांग लूंगी ॥

"सिवि दधीचि बलि जो कछु भाषा।
तनु धनु तजेउ बचन पन राषा" पृष्ट १७०

राजा सिवि जब ९२ यज्ञ कर चुके और अगे फिर प्रारंभ किया तब इन्द्र भय में प्राप्त भया कि अब मेरा पद लेने में आठ यज्ञ बाकी है उसने अग्नि को कपोत बनाया और आप बाज बन उस के मारने को चला तब वह भागा हुआ राजा की सरन में गया राजा ने उसका बचन सुन बाज को देख यज्ञशाला में अपनी गोदी में छिपा लिया और बाज को निवारन किया बाज बोला कि महाराज आप यहां यह क्या अनर्थ करते हैं कि मेरा आहार छीन लिया मैं भूख से शरीर को छोड़ आप को पापभागी करूंगा तब राजा ने कहा कि इसे तो नहीं देंगे इसके पलटे में जो माँगेगा सो देंगे पश्चात् इस प्रतिउत्तर में यह बात ठहरी कि राजा कबूतर के तुल्य तौल के अपने शरीर का मांस दे तब हम कबूतर को छोड़ देवें इस बात पर राजा प्रसन्न होय तुला पर एक ओर कपोत को बैठाय दूसरी ओर अपने शरीर का माँस काट के चढाने लगे परंतु सब शरीर का मांस काट काट के चढ़ाय दिया कबूतर के समान नहीं भया तब राजा ने गले पर खड्ग चलाया त्योंही बिष्णु ने हाथ पकड़ अपने लोक को भेज दिया ॥

जब वृत्रासुर के कष्ट से इन्द्र देवों के समेत अति दुखी होय बिष्णु के पास गए तब उन्हों ने उत्तर दिया कि राजऋषी दधीच जो नैमिषारण्य में तप करते हैं उनका हाड़ तुम लोग ले आवो तब उस हाड़ से शस्त्र बने तब उस शस्त्र से यह दैत्य पराजय होगा तब इन्द्र ने सब देवों के समेत दधीच ऋषी के पास जाय निवेदन कर अस्थि उनसे मांगा तब ऋषी ने अति प्रसन्न होय अपनी अस्थि देवों को दे शरीर को छोड़ा इन्द्र ने अस्थि ले बज्र बनाय के वृत्रासुर को पराजय किया ॥

जब राजा बलि ने अपने भुजाबल से तीनो लोक का राज्य अपने आधीन कर लिया तब इन्द्र व्याकुल हो बिष्णु के पास गए तब बिष्णु ने इन्द्र को भरोसा देकर कहा कि तुम धीरज धरो हम कुछ उपाय कर तुम्हारा राज्य दिलवाय देंगे ऐसा कह इन्द्र को विदाकर आप कस्यप वामन रूपधर राजा बलि के यहां भिक्षा मांगने को गए तब राजा बलि से बचन बांध के साढ़े तीन पैर पृथ्वी मांगा राजा बलिने जल हाथ में ले संकल्प कर दिया तब वामन जी ने विराट रूपधर तीन पैर में तीन लोक को नाप लिया अब आधा पैर जो बाकी रहा तब राजा से कहा कि महाराज आधा पैर और दीजिए तब राजा ने अपनी पीठ निहुराय दिया कि महाराज आधे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पैर में पीठ को नाप लीजिए पीठ पर पैर रख के पाताल को भेज दिया और प्रसन्न हो के कहा कि वर मांगो तब राजा बलि ने यही मांगा कि महाराज यह वामन स्वरूप आप मेरे द्वारपर खड़े रहिए ॥

"शिवि दधीच हरिचंद कहानी" पृष्ट १७७

एक समय वशिष्ठ जी ने विश्वामित्र से राजा हरिश्चंद्र की बड़ाई किया कि रघुवंश ऐसा राजा नहीं हुआ सो विश्वामित्र ने राजा के परीक्षार्थ तप बल से स्वप्न में राजा से राज्यभंडार सब संकल्प ले लिया और प्रातःकाल जाय के कहा कि आपने राचि को राज्य हमें संकल्प कर दिया परंतु उसकी दक्षिना दीजिये और राज्य छोड़ दीजिये यह सुन राजा ने विनती किया कि महाराज मेरे पास कुछ नहीं है इसमे यह क्षण रहैगी हम उद्योग करके भर देवेंगे ऐसा कह स्त्री और पुत्र को ले राजा राज्य छोड़ काशी को चले बाट में भी विश्वामित्र ब्राह्मण का स्वरूप धरके जो जो शरीर पोषनार्थ किसी उद्योग से इनको मिले सो भोजन की वेला आय के मांग लेवें इस तरह बड़े २ दुःख सहते राजा काशी में आए तब विश्वामित्र ने कहा कि महाराज मेरी क्षण दे दीजिए तब राजा ने स्त्री पुत्र को किसी राजा के यहां पलटे में रख के कुछ धन लेके विश्वामित्र को दिया और शेष जो रहा उसके निमित्त आप मसान के अधिकारी के यहां अपने को प्रतिनिधि किया तब उस मसानाधिकारी ने राजा हरिश्चन्द्र को मसान घाट पर मुर्दों का कर लेने को नियत किया वहां रह के अपने स्वामी का काम धर्मपूर्वक किया करैं फिर बिश्वामित्र ने राजा हरिश्चन्द्र के लड़के को तप से मारडाला तब उस मुर्दे को उसकी माता जलाने के लिए मसान घाट पर आइ तब राजा ने कहा यहां जो कर नियत है सो देओगी तब फूकने पावोगी तब स्त्री रोके बोली कि महाराज मैं तुमारी भार्य्या हूं और यह पुत्र है दैव की विपरीतता से इस दशा को प्राप्त भइ हूं अब मेरे पास एक कौड़ी नहीं है कर हम कहां से देवें इस बात को सुन राजा हरिश्चन्द्र ने कहा मैं धर्म का निरादर नहीं करूंगा इस से बिना कर दिए नहीं फूकने पावेगी तब वह स्त्री लाचार होके अपने तन का वस्त्र देने के लिए उतारने लगी तब स्त्री को नग्न देख देवतों ने हांहां शब्द किया निदान तब अच्छी भांति धर्म की परीक्षा बिश्वामित्र लेके प्रगट होय राजा हरिश्चन्द्र की बड़ी बड़ाई किया और बंधन से निवारन कर इनको राजधानी अयोध्या में भेज दिया ॥

"हठबस सब संकट सहे गालव नहुष नरेश" पृष्ट १८२ ॥

गालवऋषि ने जब बिश्वामित्र से विद्या पढ़ के कहा कि दक्षिणा मांगो तबविश्वामित्र बोले दक्षिणा न लेंगे इसमें गालव ने प्रति उत्तर करके हठ किया तब इनको हठी देख बिश्वामित्र ने हाज़ार श्यामकर्ण घोड़ा मांगा यह सुन गालवऋषि घोड़े की खोज में चले ढूंढते २ तीन राजा के यहां दो २ सौ घोड़े मिले परंतु उन राजाओं ने यह कहा कि मेरे पुत्र नहीं है इससे पुत्र के पलटे में घोड़ा देंगे फिर गालवऋषि ययातिराजा के पास जाय उनसे कन्या मांगा उस कन्या को वर था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि जो चाहे उससे पुत्र उत्पन्न करले परंतु वह कुंआरी ही बनी रहे वह कन्या ले आय तीनों राजा को पुत्र उत्पन्न कराय छः सौ घोड़े लेके शेष के लिए निरास होय विश्वामित्र के पास जाय निवेदन किया तब विश्वामित्र ने भी दो सौ घोड़े की कीमत की एक पुत्र जान के उस कन्या मे दो पुत्र उत्पन्न कर लिया और छः सौ घोड़े ले गालवऋषि को आशीर्वाद दे विदा किया ॥

"सुर पुरतें जनु खसेउ ययाती" पृष्ट २१६ ॥

ययाति राजा यज्ञादि धर्म का आचरण करके सदेह इन्द्र पद के लिए इन्द्रलोक को गए तब इन्द्र आगे से आय इनका सत्कार कर ले जाय के सिंहासन पर बैठाय छल के साथ बहुत बड़ाई करके इनसे पूछा कि राजा कहो तो तुम ने कैसेर धर्म किए हैं कि जिन के प्रताप से मेरे पद को प्राप्त भए तब ययाति राजा अपने पुण्य को बहुत बड़ाई के साथ इन्द्र को सुनाने लगे और पुण्य क्षीण होने लगा जब कहते २ समस्त पुण्य क्षीण हो गया तब इन्द्र की इच्छानुसार देवतों ने ययाति राजा को स्वर्ग से मृत्युलोक में ढकेल दिया ॥

"तापस अंध स्राप सधि आई। कौशिल्यहिं सब कथा सुनाई" पृष्ट २१६

एक बार श्री दशरथ महाराज अहेर खेलने गए तहाँ रात्रि होने पर नदी के किनारे पर अहेर की खोज में बैठे थे यहां श्रवन महाराज अपने अंध माता पिता की कांवर राह में उतार कर आप उन के लिए पानी को गए ज्योंही तूंबा नदी में डुबाया तो उस में से शब्द भया उस शब्द को राजा दशरथ ने मृगशब्द जानके तीर मारा वह बाण श्रवन को लगा राजा व्याकुल होय अति क्लेश के साथ श्रवन के पास जाय बोले तब श्रवन को यह भान भया कि यह राजा धर्मात्मा है तब ऐसा कहा कि हे राजा मुझे अपने शरीर का मोह नहीं परंतु मेरे माता पिता अंधे तृषावंत हैं सो तू जल्दी जाय के उन्हें पानी पिला ऐसा कह शरीर त्याग कर दिया तब राजा जल ले तापसअंध के पास गये पानी दिया तब उन्हों ने पुत्र जान कुछ बात कही राजा मौन रहे तब तापसने कहा कि हे पुत्र तुम न बोलोगे तो हम पानी न पीएंगे तब राजा ने अति दीन होय अपना नाम कह सब कारण कहा तब उन्हों ने राजा को यह स्राप दिया कि जैसे पुत्र वियोग में मेरा शरीर छूटता है तैसे ही अंत समै में तुम्हें भी पुत्र वियोग का दुख प्राप्त होगा ॥

"तनय ययातिहिं योवन दयेऊ" पृष्ट २२६ ॥

शुक्राचार्य्य की पुत्री देवयानी और वृषपर्वा की पुत्री शरमिष्ठा एक समै नहाने को गई तहां शरमिष्ठा ने भूल से देवयानी का वस्त्र पहिर लिया तब देवयानी ने कोप कर वहां शरमिष्ठा से वादा विवाद किया और शुक्राचार्य जी से आय के कहा तब शुक्राचार्य्य ने वृषपर्वा से उराहना दिया कि तेरी पुत्री ने देवयानी से वादा विवाद किया है तब वृषपर्वा ने विनती कर निवेदन किया कि जिसमें देवयानी सन्न होंय सो किया चाहिये तब शुक्राचार्य्य बोले कि वह चाहती है कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शरमिष्ठा मेरी दासी होय तब वृषपर्वा ने हजारदासी के समेत शरमिष्ठा को देवयानी की भृत्यापन में भेज दिया जब देवयानी ययाति राजा को ब्याही गई तहां शरमिष्ठा भी देवयानी के संग आई सो कहीं एक दिन राजा को शरमिष्ठा के संग क्रीड़ा करते देख देवयानी ने कोप कर पिता से जाय के कहा तब शुक्राचार्य्यजी ने ययाति राजा को स्राप दिया कि तैं बूढ़ा हो राजा ने विनती किया कि देवयानी के संग मेरी तृप्ति नहीं भई फिर ऋषि ने दया करके कहा कि तुम अपने पुत्रों से युवा अवस्था मांग लो और अपनी बुढ़ाई उन्हेंदे दो तब राजा ने देवयानी के पुत्र यदु आदि तीनों से मांगा परंतु उन्हों ने न दिया इससे उन्हें स्राप दिया तुम्हारा वंश राज्य का अधिकारी नहीं होगा ऐसेही शरमिष्ठा के दो पुत्रों से मांगा तिन में छोटे पुत्र पुरु ने पिता की आज्ञा मान अपनी युवा अवस्था दे दिया और आशीर्वाद पाया इसी से राज्याधिकारी भए और तभी से पुरुवंशी कहाए ॥

"बड़ महिमा जानहिं दुर्वासा" पृष्ट २४४ ॥

राजा अंबरीष का ऐसा नेम था कि एकादशी का व्रत करके द्वादशी में ब्राह्मण जिमाय पारन करते थे एक समै दुर्वासा ऋषि न्योता मान स्नानकरने गए और द्वादशी थोड़ी रही सो वितीत काल जान के राजा ने आचमनी चरणामृत ले पारन किया तिस के उपरान्त दुर्वासा ऋषि आए राजा को चरणामृत लिए जान कोप कर स्राप दिया सो सुन राजा कंपायमान होय पृथ्वी में गिरा और सुदरशनचक्र दुर्वासा ऋषि को जलाने को चला तब उस के भय से ऋषि भागे अब आगे ऋषि औ पीछे चक्र घूमते २ सब देवतों की शरण में गए परंतु किसी ने शरण नहीं दिया तब विष्णु ने आरत वचन सुन के इन से कहा कि तुम राजाही की शरण में जाओ वहीं तुम्हारी रक्षा करैगा तब दुर्वासा ऋषि निराश होय अंबरीष के शरण में आएतब तक राजा उसी तरह व्याकुलता से पृथ्वी में पड़ा रहा राजा इन को आते देख आगे जाय इन को आदर पूर्वक ले आए और सुदरशनचक्र को निवारन किया तब विष्णु भगवान ने अंबरीष को निर्दोषी जान दुर्वासा के स्राप को आप अंगीकार किया और राजा ने दुर्वासा ऋषि को भोजन करवाय अत्यंत प्रीति से आदर पूर्वक विदा किया ॥

"गामी गुरुतियगामी नहुष चढ़ेउ भूमिसुर यान।
लोक वेदतें विमुख भा अधम न बेनुसमान" पृष्ठ ॥ २४८

चंद्रमा के गुरू बृहस्पति तिन की स्त्री तारा उस ने काम के बस मोहित होय चंद्रमा से कहा कि मेरे संग भोग करो तब चंद्रमा गुरुस्त्री का विचार कुछ मन में न लाए और उसके साथ भोग किया जब वह गर्भवती भई और पुत्र भया जिस का बुध नाम है तब बृहस्पति महाराज बुधका नाम करन करने को बैठे उस समय चंद्रमा ने जाय के कहा कि महाराज यह पुत्र मेरा है मुझ को दीजिए ऐसा कह सब समाचार गुरु जी को सुनाया तब बृहस्पति बोले कि वीर्य्य तुम्हारा है परंतु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्षेत्र हमारा है इससे पुत्र का अधिकारी मैं हूं इस में दोनों महात्मा प्रत्युत्तर करने लगे फिर देवतों ने इस की पंचायत कर बुध को चंद्रमा को दिला दिया ॥

राजा नहुष चंद्रवंशी और राजधानी प्रतिष्ठानपुर में बड़े धर्मात्मा प्रतापी राजा भए एक समैं जब इंद्र वृत्रासुरकी हत्या के भय से भाग कर मानसरोवर कमल नाल में जाय छिपे तब इंद्रपद खाली देख बृहस्पति महाराज राज्य प्रबंध के निमित्त राजा नहुष को बुलाय इन्द्रपद दे के स्थापन किया तब राजा बड़े जस प्रताप के साथ इन्द्रपद का राज्य भोग करने लगे किसी समय इन को राज्यपद से यह नीच काँछा उत्पन्न भई कि मैं ने इन्द्रपद पाय के क्या किया जो इन्द्रानी के साथ भोग नहीं किया ऐसा विचार कर इन्द्रानी से यह संदेसा कहला भेजा तब इन्द्रानी अति व्याकुल भई पश्चात् यह प्रतिज्ञा ठहरी कि राजा ब्राह्मणों को कहार नाय यान पर बैठ के आवैं तो हम उनके संग भोग करैं यह बात सुन कामके बस हठ करके सप्तऋषियों से राजाने कहा कि महाराज आप थोड़ा परिश्रम करें तो हमें इन्द्रानी प्राप्त होय ऐसा कह यान पर बैठा तहां पथ में ये ऋषि सत्यमार्गी धीरे २ नीचे देख पैर धरैं औ राजा काम के बस ऊपर से जलदी २ उच्चारण करे निदान राजा क्रोध में आय ऊपर से सर्प २ चिल्लाया तब तो सप्तऋषियों ने क्रोधित होय बिमान पटक कर श्राप दिया कि अरे राजा काम बस तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई इससे तू मृत्यलोक में जाके सर्प होय तब राजा मृत्यलोक में गिर सर्प भया ॥

राजा वेणु अपनी लड़कई से बड़ा क्रूर था और अनेक तरह के उपद्रव प्रति दिन किया करै इस से प्रजा को दुःख देखि वेणु के पिता अंग राजा को बड़ा क्लेश प्राप्त भया पश्चात् अंगराजा के मरने पर जब यह राज्य का अधिकारी भया तब तो इसने यह आज्ञा दी कि कोई शास्त्र पुराण वेद को न मानै उसके बदले में सब कोई मेरा गुण गान करैं और परमेश्वर मुझी को मानैं और जो कोई मेरी आज्ञा न मानैगा सो दंड के योग्य होगा इस बात के प्रचलित होने से सुर मुनि प्रजा अति दुखी भई पश्चात् एक समैं ऋषि लोगों ने आपस में विचार किया कि राजा के पास चलकर इस विषे में कुछ बात चीत करनी चाहिए ऐसा सोच के ऋषियों ने आय के राजा को बहुत ज्ञान उपदेश किया परंतु उसके चित्त में कुछ भी न आया यही उत्तर दिया कि तुम अज्ञानी हो तब ऋषियों ने क्रोध से स्रापा देके मारडाला पुनि ऋषियों ने राजगद्दी भ्रष्ट जान के उसके शरीर को मथा तब प्रथम जांघ में से एक काला मनुष्य निकला उसको पाप रूप ठहराया फिर भुजा में से पृथु निकले तब इन्हें धर्म का अवतार जान के राजगद्दी दिया सो राजा पृथु बड़े धर्मात्मा नामी राजा भए और काला मनुष्य जो प्रथम निकला था उसे कलिंग का राज्य दिया उसी की सन्तान निषाद कहलाई ॥

"सहसबाहु सुरनाथ त्रिशंकू ।
केहि न राजमद दीन्ह कलंकू" पृष्ट २४८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महस्रबाहु क्षत्री राजा महादेव के प्रसाद करके महाबली हुआ एक समैं सैना संग लेके अहेर खेलने गया वहां क्षुधावंत होय दूत को भेजा कि यहां कोई स्थान होय तो पानी मांग लावो दूत खोजता हुआ यमदग्नि के पास जाय उनसे कहा कि राजा प्यासे हैं तब ऋषि बोले कि राजा को बुला लावो यहां भोजन कर श्रम खोकर चले जांयगे तब दूत ने राजा से जाय के कहा राजा राजमद से बोला कि इतना भोजन ऋषि कहां पावेगा कि सेना समेत मेरी तृप्ति होगी इस बात को दूतद्वारा ऋषि सुन के बोले कि इसका सोच कुछ तुमारे राजा न करैं आज मेरे अतिथि होंय तब राजा सेना के साथ ऋषि के स्थान में गए और ऋषि महाराज ने काम धेनु के प्रसाद करके राजा की पहुनई की तब महस्रबाहुने ऋषि से पूछा इतना समान आप ने क्षण मात्र में कैसे कर लिया तब ऋषि ने निवेदन किया कि महाराज मेरे यहां कामधेनु है तब राजा ने कहा कि वह कामधेनु मुझ को दीजिए इस बात को सुन के ऋषिने बहुत उदास होय निवेदन किया परंतु राजाने नहीं माना और आज्ञा दिया कि कामधेनु को खोल ले चलो तब ऋषि ने विनती किया तब कामधेनु से म्लेच्छ पैदा भए उनसे और राजा से लड़ाई होने लगी फिर क्रोध में आकर सहस्रबाहु ने यमदग्नि का सिर काट डाला और रेणुका को भी घायल कर कामधेनु को ले के चला गया तब परशुराम कैलास पर समाचार सुन के आय पिता को मरा देख माँता को संतोष के निमित्त पन किया कि पृथ्वी पर क्षत्री का बीज न रखैंगे ऐसा कह सहस्रबाहु को जाय मारा ॥

फिर लक्ष्मण बोले कि रामजी देखो राजा इन्द्र राजमद करके गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या से भोगकर उसके फलसे अपनेको कलंकी बनाया यह प्रसंग पहिले कहचुके हैं॥

राजा त्रिशंकू को राजमद करके यह कांक्षा भई कि हम ऐसा यज्ञ करैं कि सदेह स्वर्ग को जांय ऐसा विचार वशिष्ठ से जा कहा तब वशिष्ठ अभिमानी जान बोले कि ऐसी शास्त्र की मर्यादा नहीं फिर वशिष्ठ के पुत्र शक्ति से पूछा शक्ति ने गुरुवचन का अविश्वास देख के स्राप दिया कि तूं चांडाल है पिता पुत्र में द्वेष किया चाहता है तब त्रिशंकू चांडाली वृत्ति से वशिष्ठ की कामधेनु को मारा इस तीन पाप से तीन सींग माथे में जमे इसी से त्रिशंकू नाम पड़ा फिर यह राजा विश्वामित्र के शरण गया उन्होंने इससे यज्ञ प्रारंभ करवाया यह समाचार देख वशिष्ठादि सब ऋषि देवता मिलके यज्ञ विध्वंस करने लगे तब विश्वामित्र ने तपबल करके ऋषि और देवता नये उत्पन्न कर यज्ञ को पूरा कर त्रिशंकू को आज्ञा दिया कि स्वर्ग को चलाजा जब त्रिशंकू स्वर्ग में गया तब वहां से देवतों ने नीचे ढकेला इस खैंचा खैंची में वह उलटा होय अधर में लटक रह गया सो त्रिशंकू तारा विदित है और उसी के मुंह से जो लार टपकी सो कर्मनाशा नदी भई जो बनारस बिहार के जिले के बीच बहती है और शास्त्र में उसका पानी छूना वर्जित है ॥ २४६

"दंडकवन पुनीत प्रभु करहू। उग्र स्राप मुनिवर कहँ हरहू" २४६ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चेव हमारा है इससे पुत्र का अधिकारी मैं हूं इस में दोनों महात्मा प्रत्युत्तर करने लगे फिर देवतों ने इस की पंचायत कर बुध को चंद्रमा को दिला दिया ॥

राजा नहुष चंद्रवंशी और राजधानी प्रतिष्ठानपुर में बड़े धर्मात्मा प्रतापी राजा भए एक समैं जब इंद्र वृत्रासुरकी हत्या के भय से भाग कर मानसरोवर कमल नाल में जाय छिपे तब इंद्रपद खाली देख बृहस्पति महाराज राज्य प्रबंध के निमित्त राजा नहुष को बुलाय इन्द्रपद दे के स्थापन किया तब राजा बड़े जस प्रताप के साथ इन्द्रपद का राज्य भोग करने लगे किसी समय इन को राज्यपद से यह नीच काँछा उत्पन्न भई कि मैं ने इन्द्रपद पाय के क्या किया जो इन्द्रानी के साथ भोग नहीं किया ऐसा विचार कर इन्द्रानी से यह संदेसा कहला भेजा तब इन्द्रानी अति व्याकुल भई पश्चात् यह प्रतिज्ञा ठहरी कि राजा ब्राह्मणों को कहार नाय यान पर बैठ के आवैं तो हम उनके संग भोग करैं यह बात सुन कामके बस हठ करके सप्तऋषियों से राजाने कहा कि महाराज आप थोड़ा परिश्रम करें तो हमें इन्द्रानी प्राप्त होय ऐसा कह यान पर बैठा तहां पथ में ये ऋषि सत्यमार्गी धीरे २ नीचे देख पैर धरैं औ राजा काम के बस ऊपर से जलदी २ उच्चारण करे निदान राजा क्रोध में आय ऊपर से सर्प २ चिल्लाया तब तो सप्तऋषियों ने क्रोधित होय विमान पटक कर आप दिया कि अरे राजा काम बस तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई इससे तू मृत्यलोक में जाके सर्प होय तब राजा मृत्यलोक मेंगिर सर्प भया ॥

राजा वेणु अपनी लड़कई से बड़ा क्रूर था और अनेक तरह के उपद्रव प्रति दिन किया करै इस से प्रजा को दुःख देखे वेणु के पिता अंग राजा को बड़ा क्लेश प्राप्त भया पश्चात् अंगराजा के मरने पर जब यह राज्य का अधिकारी भया तब तो इसने यह आज्ञा दी कि कोई शास्त्र पुराण वेद को न मानै उसके बदले में सब कोई मेरा गुण गान करैं और परमेश्वर मुझी को मानें और जो कोई मेरी आज्ञा न मानेगा सो दंड के योग्य होगा इस बात के प्रचलित होने से सुर मुनि प्रजा अति दुखी भई पश्चात् एक समैं ऋषि लोगों ने आपस में विचार किया कि राजा के पास चलकर इस विषे में कुछ बात चीत करनी चाहिए ऐसा सोच के ऋषियों ने आय के राजा को बहुत ज्ञान उपदेश किया परंतु उसके चित्त में कुछ भी न आया यही उत्तर दिया कि तुम अज्ञानी हो तब ऋषियों ने क्रोध से स्रापा देके मारडाला पुनि ऋषियों ने राजगद्दी भ्रष्ट जान के उसके शरीर को मथा तब प्रथम जांघ में से एक काला मनुष्य निकला उसको पाप रूप ठहराया फिर भुजा में से पृथु निकले तब इन्हें धर्म का अवतार जान के राजगद्दी दिया सो राजा पृथु बड़े धर्मात्मा नामी राजा भए और काला मनुष्य जो प्रथम निकला था उसे कलिंग का राज्य दिया उसी की सन्तान निषाद कहलाई ॥

"सहसबाहु सुरनाथ त्रिशंकू।
केहि न राजमद दीन्ह कलंकू" पृष्ट २४८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महस्रबाहु छत्री राजा महादेव के प्रसाद करके महाबली हुआ एक समैं सेना संग लेके अहेर खेलने गया वहां तृषावंत होय दूत को भेजा कि यहां कोई स्थान होय तो पानी मांग लावो दूत खोजता हुआ यमदग्नि के पास जाय उनसे कहा कि राजा प्यासे हैं तब ऋषि बोले कि राजा को बुला लावो यहां भोजन कर श्रम खोकर चले जांयगे तब दूत ने राजा से जाय के कहा राजा राजमद से बोला कि इतना भोजन ऋषि कहां पावेगा कि सेना समेत मेरी तृप्ति होगी इस बात को दूतदूगा ऋषि सुन के बोले कि इसका सोच कुछ तुमारे राजा न करैं आज मेरे अतिथि होंय तब राजा सेना के साथ ऋषि के स्थान में गए और ऋषि महाराज ने काम धेनु के प्रसाद करके राजा की पहुनई करी तब महस्रबाहुने ऋषि से पूछा इतना समान आप ने छण मात्र में कैसे कर लिया तब ऋषि ने निवेदन किया कि महाराज मेरे यहां कामधेनु है तब राजा ने कहा कि वह कामधेनु मुझ को दीजिए इस बात को सुन के ऋषिने बहुत उदास होय निवेदन किया परंतु राजाने नहीं माना और आज्ञा दिया कि कामधेनु को खोल ले चलो तब ऋषि ने विनती किया तब कामधेनु से म्लेच्छ पैदा भए उनसे और राजा से लड़ाई होने लगी फिर क्रोध में आकर सहस्रबाहु ने यमदग्नि का सिर काट डाला और रेणुका को भी घायल कर कामधेनु को ले के चला गया तब परशुराम कैलास पर समाचार सुन के आय पिता को मरा देख माँता को संतोष के निमित्त पन किया कि पृथ्वी पर छत्री का बीज न रखैंगे ऐसा कह सहस्रबाहु को जाय मारा ॥

फिर लक्ष्मण बोले कि रामजी देखो राजा इन्द्र राजमद करके गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या से भोगकर उसके फलसे अपनेको कलंकी बनाया यह प्रसंग पहिले कहचुके हैं॥

राजा त्रिशंकू को राजमद करके यह कांक्षा भई कि हम ऐसा यज्ञ करैं कि सदेह स्वर्ग को जांय ऐसा विचार वशिष्ठ से जा कहा तब वशिष्ठ अभिमानी जान बोले कि ऐसी शास्त्र की मर्यादा नहीं फिर वशिष्ठ के पुत्र शक्ति से पूछा शक्ति ने गुरुवचन का अविश्वास देख के स्राप दिया कि तूं चांडाल है पिता पुत्र में द्वेष किया चाहता है तब त्रिशंकू चांडाली वृत्ति से वशिष्ठ की कामधेनु को मारा इस तीन पाप से तीन सींग माथे में जमे इसी से त्रिशंकू नाम पड़ा फिर यह राजा विश्वामित्र के शरण गया उन्होंने इससे यज्ञ प्रारंभ करवाया यह समाचार देख वशिष्ठादि सब ऋषि देवता मिलके यज्ञ विध्वंस करने लगे तब विश्वामित्र ने तपबल करके ऋषि और देवता नये उत्पन्न कर यज्ञ को पूरा कर त्रिशंकू को आज्ञा दिया कि स्वर्ग को चलाजा जब त्रिशंकू स्वर्ग में गया तब वहां से देवतों ने नीचे ढकेला इस खैंचा खैंची में वह उलटा होय अधर में लटक रह गया सो त्रिशंकू तारा विदित है और उसी के मुंह से जो लार टपकी सो कर्मनाशा नदी भई जो बनारस बिहार के जिले के बीच बहती है और शास्त्र में उसका पानी छूना वर्जित है ॥ २४६

"दंडकवन पुनीत प्रभु करहू। उग्र स्राप मुनिवर कै हरहू" २४६ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक समैं पंचवटी में दुर्भिच्च पड़ा तब सब मुनि आहारार्थ गौतमऋषि के पास गये तब गौतम ने तपबल करके बहुत काल तक ऋषियों का पालन किया पश्चात् ऋषियों ने आपस में विचार किया कि अब जनस्थान को चलना चाहिए परंतु गौतम के भय से जा न सके तब सभों ने छल करके मायाकृत एक गऊ बनाया गौतमऋषि के हाथ में दे उसकी प्रशंसा करने लगे इस में वह हाथ में छूट मर गई तब ऋषियों ने गौतम को गोहत्या दोष लगाय दंडकारण्य को चले गए और गौतमऋषि ने जब जाना कि ऋषियों ने छल किया तब यह स्राप दिया कि जिस बन के लोभ से तुम ने मुझ से छल किया वह भ्रष्ट हो जाय और राक्षस वास करैं ॥

दूसरी कथा कि राजा दंड ने अपने गुरु पुत्री के अप्रसन्नता में भोग किया तब उसने अपने पिता भृगुमुनि से जाय कहा तब मुनि ने स्राप दिया कि इस राजा का सब देश भ्रष्ट हो जाय और वहां धूरि बरसे तब ऋषि लोग वहां से भाग कर जहां बसे वह जगह का नाम जनस्थान पड़ा ॥

"सेवरी देखि राम गृह आए ।
मुनि के वचन समुझि जियभाए" पृष्ट ३१०॥

सेवरी के गुरु परंधाम को जब जाने लगे तब सेवरी ने निवेदन किया कि मैं भी शरीर छोड़ परंधाम को जाऊंगी तब मुनिने कहा कि तू इस कुटी में रह तेरे यहां कुछ दिनमें राम लक्ष्मण आवैंगे तब तू उनका दर्शन करके शरीर त्याग करियो इसवचन को सुन विश्वास पूर्वक तब से प्रतिदिन उसका यह नेम था कि सबेरे कुटी लीपके बन में जाय दो दोना भर फल ले आय कुटीमें रखके बाहर बैठसांझ तक राह देखा करै जब रात होय तब निराश होय वही फल खाके सो रहैइसी तरह प्रतिदिनकरते २ दस हजार वर्ष बाद राम जी पधारे तब दर्शन करके शरीर त्याग परंधाम को गई ॥

"इहांस्राप वस आवत नाहीं ।
तदपि सभीत रहौं मनमाहीं" पृष्ट ३२१ ॥

प्रवर्षन पहाड़ पर मतंगऋषि तपस्या करते थे कि बाली ने दुंदुभी दैत्य को आकाश में युद्ध करते २ पटका सो मतंगऋषी के पास गिर के मर गया और उस के रुधिर का छींटा ऋषी के ऊपर पड़ा तब ऋषी ने क्रोध कर बाली को शाप दिया आज से फिर यहाँ आवेगा तो भस्म होजायगा ॥

"तेहि सब आपनि कथा सुनाई । मैं अब जाव जहां रघुराई" पृष्ट३३०

देव अंगना नाम करके एक स्त्री ने बदरीवन में तप करके ब्रह्मा से वर मांगा कि हमें रघुनाथ जी का दर्शन होय तब ब्रह्मा ने उसे इस बिबर में रहने को कहा कि यहां रह तुम्हें बानर द्वारा श्री रामावतार की कथा सुन के राम जी का दर्शन होगा तब से वह स्त्री यहां रहती थी बानरों से समाचार सुन प्रवर्षनगिरि पर जाय श्री राम जी का दर्शन कर फिर बदरीबन निज स्थान को गई ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नाथ नील नलकपि दोउ भाई।
लरिकाई रिषि आशिष पाई" पृष्ट ३६०

नील नल अपनी बाल अवस्था में जब समुद्र के किनारे मुनि लोग सालिगराम की पूजा कर आंख मूद ध्यान अवस्था में प्राप्त होंय तब ये सालिगराम को उठा के पानी में फेंक दें ऐसा देख के मुनि लोगोंने व्याकुल होय यह स्राप दिया कि इस बानर का छुआ पत्थर पानी में डूबे नहीं सो स्राप आशीर्वाद के तुल्य भया॥

"होइहैं कीन्ह कबहुं अभिमाना।
सो खोवै चह कृपानिधाना" ॥ पृष्ट ४६५ ॥

एक समय कागभसुण्डि दशरथ के आंगन में बाल लीला देख रहे थे कि देखते २ इनको मोह हुआ तब राम जीके हाथ से पूरी छीन के भागे राम जीने मोह से इनकी ढिठाई देख गरुड़ का स्मरण किया सो गरुड़ औ भसुण्डि दोनों में अत्यन्त युद्ध भया निदान कागभसुण्डि घायल होय भाग के तीनों लोक में फिरे कहीं गरुड़ ने पीछा नहीं छोड़ा तब फिर राम जी की शरण में आए तब राम जीने गरुड़ को निवारन कर कागभसुंडि को ज्ञान उपदेश दिया वही अभिमान गरुड़ को रहा कृपानिधान ने श्रोता बनाय अभिमान खंडन किया॥

। गूढ़ार्थ ।

अवस्था——जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, । इनके विभु ये हैं, जाग्रत के विश्व। स्वप्न के तैजस। सुषुप्ति के प्राज्ञ। तुरीय के ब्रह्म।

अविद्या——जीवों की अल्पज्ञता।

अंग——वेद के अंग छः हैं। १ शिक्षा २ कल्प ३ व्याकरण ४ निरुक्ति ५ छंद ६। ज्योतिष् वेद पढ़ने की विधि को शिक्षा कहते हैं। कल्प उसे कहते हैं जिसमें सब कर्मों के करने की रीति लिखी है। व्याकरण उसे कहते हैं जिससे शब्दों की शुद्धता का ज्ञान हो। जिसमें वेद के कठिन शब्दों का अर्थ लिखा है उसे निरुक्ति कहते हैं। जिससे अक्षर मात्रा वृत्त का ज्ञान हो उसे छंद कहते हैं।

आश्रम——चार प्रकार के आश्रम हैं १ ब्रह्मचर्य २ गृहस्थ ३ वानप्रस्थ ४ संन्यास।

आकार——आकार चार हैं १ पिंडज अर्थात् जो देह के साथ उत्पन्न होते हैं जैसे मनुष्य पशु आदि २ अंडज जो अंडे से होते हैं जैसे पक्षी सांप आदि ३ स्वेदज, जो पानी से उत्पन्न होते हैं जैसे चीलर जीव आदि ४ उद्भिज्ज जो पृथ्वी को फोड़ के होते हैं जैसे वृक्ष आदि॥

आभरण——बारह हैं, नूपुर। किंकिनी। हार। चूरी। मुंदरी। कंकण। बाजूबन्द। कंठश्री। बेसर। बिरिया। टीका। शिरफूल॥

उपवेद——सामवेद का उपवेद गांधर्ववेद अर्थात् संगीतशास्त्र। ऋग्वेद का उपवेद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आयुर्वेद अर्थात् वैद्यक। यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद । अथर्ववेद का उपवेद वास्तु अर्थात् शिल्पविद्या।

ऋतु———ऋतु छः हैं १ बसंत, चैत बैसाख २ ग्रीष्म, जेठ असाढ़ । ३ पावस, सावन भादों ४ शरद, कुआर कातिक ५ हेमंत, अगहन पूसह शिशिर, माघ फागुन॥

कल्प———चारोंयुग को चौकड़ी कहते हैं और हजार चौकड़ी का एक कल्प होता है।

गुण———तीन गुण हैं अर्थात् सत, रज, तम, । और राजा के चार गुण हैं अर्थात् साम, दान, दंड विभेद ।

चतुरंगिनीसेना—जिस सेना के चार अंग हैं अर्थात्, हाथी घोड़ा, रथ, पैदल।

तत्व———पांच तत्त्व हैं अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश।

तिताप——तीन प्रकार का दुःख अर्थात् आध्यात्मिक, अधिभौतिक, आधिदैविक।

तिदेव———अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश।

त्रिविध कर्म—संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण।

दिक्पाल—अर्थात् दिशाओं के रक्षक, पूर्वदिशा के इन्द्र। आग्नेय के अग्नि, दक्षिण के यम। नैऋत के निऋत। पश्चिम के वरुण। वायव्य के वायु। उत्तर के कुवेर। ईशान के ईशान।

पुराण——पुराण उसे कहते हैं जिस में इन पांचों का वर्णन हो अर्थात् सर्ग, प्रतिसर्ग, मन्वन्तर, वंश चरित।

भक्त———चार प्रकार के भक्त हैं अर्थात् आर्त्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी, विज्ञाननिवास।

भक्ति———नव प्रकार की भक्ति हैअर्थात् श्रवण,कीर्त्तन,स्मरण,चरणसेवा,अर्चन,वन्दन, दासता, सख्य।

युग———चार युग हैं अर्थात्, सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग।

योनि———चौरासी लाख योनि हैं, नव लाख जलचर, सत्ताईस लाख स्थावर, ग्यारह लाख कृमि, दस लाख पक्षी, चौपाये तेईस लाख. मनुष्य चार लाख।

राम———राम तीन हैं अर्थात् परशुराम, बलराम, श्री रामचन्द्र।

विद्या——ईश्वर की सर्वज्ञता को विद्या कहते हैं।

शास्त्र———छः शास्त्र हैं अर्थात् वेदांत, सांख्य, योग, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक,

शृंगार——सोलह प्रकार का सिंगार है, अंगशुचि, मज्जन, अमलवसन, पहिरन, जावक, केश संवारना, मांग में सेंदुर लगाना, भाल में खौरी अर्थात् तिलक, चिबुक पर तिल बनाना, मेंहदी लगाना, अरगजा अंग में लगाना, भूषण पुष्प, सुगंधलगाना मुखराग, दांत रंगना, अधरराग, काजरलगाना।

सप्तऋषि—सात ऋषि अर्थात् कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, भरद्वाज, गौतम, यमदग्नि।

समीर—तीन प्रकार की वायु अर्थात्, शीतल, मंद, सुगंध।

सिद्धि—आठ सिद्धि हैं अर्थात् अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha